"एकम् सद् विप्रा वहुधा वदन्ति"
"महासाम्राज्य पदवीं आरूढा परमेश्वरी"

।। श्री हरिः ।। ।। श्री श्रीर्जयति ।। ।। श्री स्वामिनी जी ।।

श्री वैदिक सनातन

व्रतोत्सव पर्व प्रकाशिनी

विक्रम सम्वत् 2078, राष्ट्रीय (शाक) सम्वत् 1943
बार्हस्पत्य मानेन – षष्टि अब्दानां मध्ये ब्रह्मा विष्णु रूद्र
शिव विंशतिकायां नवचत्वारिंशत् (49वां) संवत्सरे

।। जय जय श्रीजी परम कृपालु शिव कामेश्वर वृहद् गोपाल ।।

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठस्य (श्रीजी दरबार–बड़ी हवेली)
मतानुसारेण–सनातन धर्म मूल 'काल व्यापिन मतानुसारेण'
श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद् :
द्वारा प्रकाशित

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्काल व्यापिनी तिथिः।
तथा कर्माणि कुर्वीत, ह्रास वृद्धि न कारणम्।। (वृद्ध याज्ञवल्क्य)

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद् आचार्य
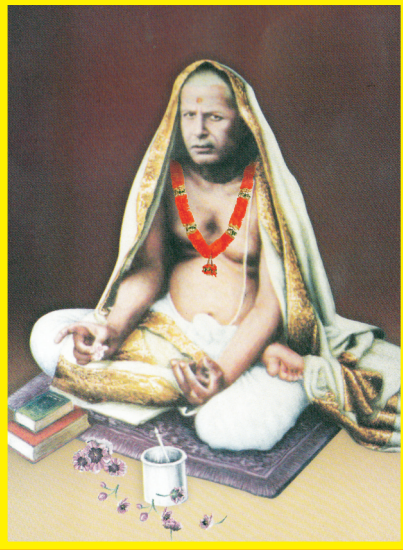
श्री श्री 1008 श्री वासुदेव जी बाबा महाराज
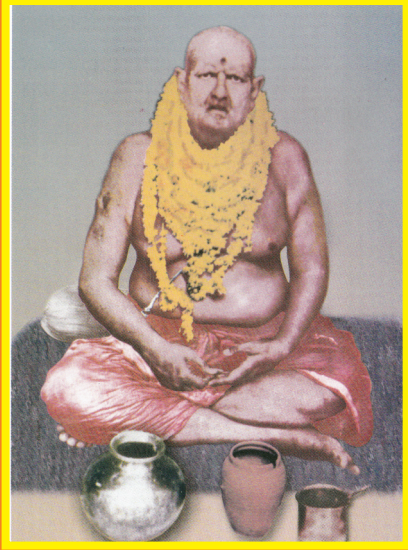
श्री श्री 1008 श्री केशवदेव जी महाराज
(गुरुजी महाराज)
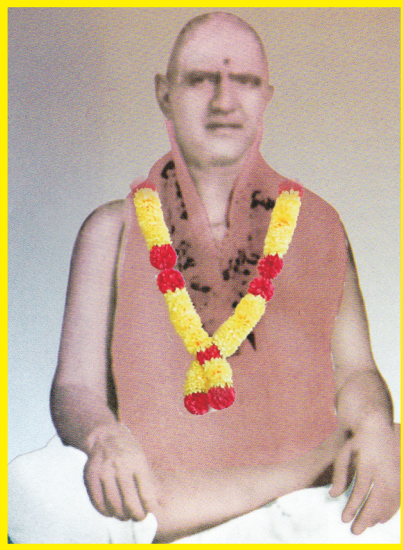
श्री श्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज
(लाल बाबा महाराज)
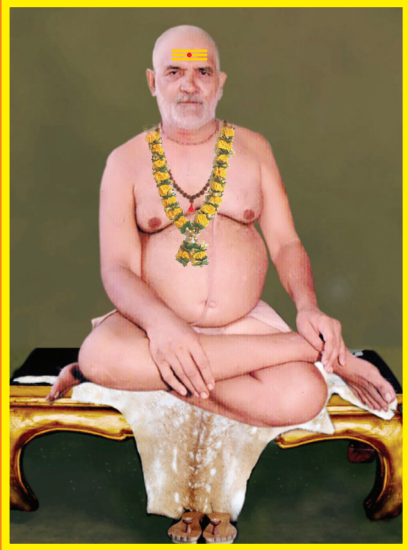
श्री श्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज
(मुन्ना बाबा महाराज)

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशार युग्ममन्वस्रनागदतासंयुत षोडशारम्
वृत्तत्रयं च धरणी सदन त्रयं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः ।।
सा तेजः पुंजाकृतिःऽनामाख्या श्रीविद्येति, परब्रह्मस्वरूपिणी चिच्छक्तिः
श्री विद्यैव अनामेति - भगवान श्री गौडपादाचार्यः

''बिन्दु त्रिकोण, अष्ट कोण, दशकोण पुनः दशकोण, चतुर्दश कोण, अष्टदल पद्म, षोडश दल पद्म, त्रिवृत्त और चतुरस्र ऐसे महान चक्रराज श्रीचक्र में जगत के एकमात्र अधिष्ठान अद्वय परतत्व परदेवता श्री श्रीजी महाराज का उदय होता है अर्थात् परदेवता का पूजन किया जाता है ।''

''परदेवता का वह तेज पुञ्ज वह परतत्व सच्चिदानन्द अद्वय परब्रह्म जो श्री विद्यान्तर्गत प्रकट होता है वह अनामाख्य है ।''
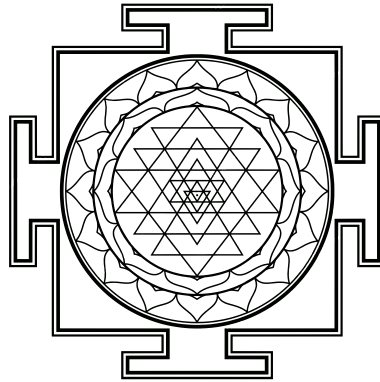
''जब मनुष्य अपनी मति को किसी विशिष्ट प्रकार की बना लेता है तब उसको तत्व का दर्शन नहीं होता है, उसे विशेषण का दर्शन होता है। जब किसी मत विशेष का आग्रह कर लोगे तो जो अमत है, जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है जो सर्वोच्च परब्रह्म है जो 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।' तुम्हारी मति का भी प्रेरक है, जो तुम्हारी मति के भी पेट में बैठा हुआ है उस चिन्मात्र सर्वोच्च तत्व का दर्शन किस प्रकार होगा ? लाल, पीले, हरे चश्मे से तो लाल, पीला, हरा ही दिखेगा ना !''

''जिसके मन में सत्य से प्रेम नहीं होता, उसके मन में ज्ञान से भी प्रेम नहीं होता ।''

- अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध
श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज
(श्री मुन्ना बाबा महाराज)

।। श्री श्रीर्जयति ।। ।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।। ।। पराम्बा श्री राजराजेश्वर्यै नमः।।

श्री सत्यसनातनधर्मोविजयतेतराम्

।। श्री बाबा महाराजाय नमः ।।

प्राक्कथन

'**प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्**' ज्योतिषशास्त्र में प्रत्यक्षता का अर्थ होता है – ''गणितागणित परिणाम का ज्यों का त्यों दिखलाई देना।'' ''ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां शास्त्रम्'' – सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है। अतः ज्योतिष में दृक् सिद्ध या प्रत्यक्षा का विशेष महत्व है। उदाहरणार्थ जिस समय गणित से पूर्णिमा आये उस समय चन्द्रमा का परिपूर्ण बिम्ब दिखलाई दे आदि-आदि। हमारे पूर्वज ऋषियों ने अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण के द्वारा समय का विभाजन, उसका प्रभाव और देशकाल की स्थिति आदि का विवेचन कर उसको पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की है।

दृश्य सृष्टि अर्थात् नाम, रूप और कर्मात्मक सृष्टि, हमारे वैदिक ऋषियों का यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि इस नाम रूपात्मक आवरण के लिए आधार भूत एक अरूपी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र और अविनाशी आत्मतत्व है जिसे – '**इदं सर्वं यदात्मा ।**' – **आत्मा वा इदं सर्वं ।**', '**कालात्मा भगवान स्वयं**' आदिक नामों से श्रुति पुकारती है और तदनुसार प्राचीन मनीषी और ऋषि ज्योतिष शास्त्र के लिए ज्योतिः शास्त्र' ऐसा कथन करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि समस्त भारतीय वांगमय दर्शन या विज्ञान का एकमात्र लक्ष्य स्व चेतना का विकास कर उसे परमात्मा में मिला देना या तत्तुल्य बना देना है । **भारतीय दर्शन / विज्ञान की प्रमुख विशेषता आत्मा की प्रेष्ठता या आत्मज्ञान है।** परन्तु वर्तमान में कई प्रकार की विसंगतियां देखने में आती हैं, जिनके कारण व्रत पर्वो आदि में भिन्नता आ जाती है, जिसका मुख्य कारण है – विभिन्न सम्प्रदायों की मान्यताऐं और कुछ आग्रह विशेष जो तद्-तद् सम्प्रदायों के नियामक ग्रन्थों पर आधारित होती हैं। बृहद योगी याज्ञवल्क्य के शब्दों में '**कर्मणो यस्य यः कालस्तत्काल व्यापिनी तिथिः। तथा कर्माणि कुर्वीत ह्रास वृद्धि न कारणम्।।**' अर्थात् कर्म के किये जाने के समय व्याप्त तिथि ही वास्तविक तिथि है और इस प्रकार जब कार्य किया जाता है तो ह्रास और वृद्धि कोई कारण ही नहीं है। वास्तव में न तो सम्प्रदाय धर्म है और न ही धर्म सम्प्रदाय। धर्म मुख्य है और सम्प्रदाय गौण, धर्ममूल वेद हैं, इसमें कोई संशय नहीं है – '**वेदोऽखिलोधर्ममूलं**'। श्री वैदिक सनातन धर्म अपने मूल स्वभाव में श्रौत स्मार्त धर्म है, यज्ञोपवीत धारण का विनियोग ही है कि '**श्रौत स्मार्त कर्म सिद्ध्यर्थं यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।**' अतः स्पष्ट है कि यज्ञोपवीत। जनेऊ या ब्रह्मसूत्र

धारण करने वाले द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) मात्र श्रौत स्मार्त हैं। जैसा कि करपात्री जी महाराज कहते थे कि ये वैष्णव, शैव, शाक्तादि हो तो सकते हैं किन्तु श्रौत स्मार्त धर्म से अविरुद्ध सम्प्रदाय विशेष की परम्परा का ही पालन कर सकते हैं। **अर्थात् पहले ये श्रौत स्मार्त है और श्रौत स्मार्त धर्म का ही इनके यहां प्राधान्य रहेगा तदन्तर स्वरूचि के अनुसार ये वैष्णव शैव आदि हो सकते हैं किन्तु उन वैष्णव शैव आदिक सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को केवल उसी सीमा तक मान सकते हैं जहां तक कि वे मूल श्रौत स्मार्त धर्म के विरूद्ध न हों।**

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य सरलतापूर्वक श्रौत स्मार्त सद्गृहस्थों को मूल सनातन धर्मानुसार व्रत-पर्व-उत्सवादिक का ज्ञान कराना है तथा मथुरास्थ **वैदिक सनातन धर्म के पीठ - श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, महाराजश्री की ठेक, गतश्रम टीला के उत्सवों एवं पर्वों की जानकारी देना है। ज्ञात रहे कि 'श्रीपीठ - श्रीजी मंदिर' बड़ी हवेली आप्त महर्षियों वैदिक ऋषियों द्वारा उपदेशित श्रौत स्मार्त परंपरा का अवलम्बन करता है और स्मार्त वैष्णव, स्मार्त शैव आदिक सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा का केन्द्र रहा है। श्री जी दरबार बड़ी हवेली की ये परम्परा सर्वथा ऊर्ध्वरेता आप्तकाम ऋषियों की गरिमा के अनुकूल है।**

वास्तव में तो कालव्यापिनी तिथि ही हर स्थिति में हरेक व्यक्ति चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय से हो, ग्रहण करता ही है। उद्धरण के लिये किसी बालक के जन्म की दशा में यदि जन्म रात्रि आठ बजे है और सात बजे तक नवमी तिथि है और उसके पश्चात् दशमी, तब दशमी ही जन्मतिथि ग्रहण की जायेगी। अतः समझा जा सकता है कि कालव्यापिनि ही सनातन धर्म का मूल सिद्धान्त है और यही सिद्धान्त क्षयादिक में भी अनुसरण किया जाता है। तब विसंगति विडम्बना ही है।

केवल एकादशी व्रत के सम्बन्ध में एक अलग व्यवस्था है, और वह भी केवल इसलिये कि एकादशी व्रत आध्यात्म से सम्बन्धित है, काल से सम्बन्धित नहीं। **ध्यान दें कि 'एकादशी तिथि नहीं, एकादशी व्रत** और तदनुसार व्रतोत्सव पर्व दीपिका की व्यवस्था है। हमारे महान प्रपितामह एवं गुरू **अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातःस्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री शिवप्रकाशदेव जी महाराज (श्री लालबाबा महाराज) जो भारतवर्ष के मान्य विद्वानों में थे, और आगम-निगम दोनों के विद्वान एकमत से आप से नतमस्तक थे,** के शब्दों में, ''उपोष्या द्वादशी शुद्धाः - द्वादशी ही एकादशी मानी जानी चाहिये एवं पंचदशी के दोनों कूटों का योग मान लेना चाहिये। दशमी विद्धा एकादशी उपोष्या नहीं होती, प्रत्युत द्वादशी विद्धा होनी चाहिये अन्यथा शुद्ध द्वादशी

ही उपोष्या माननी चाहिये। ''**एकादश्यां दशमी वेधे दशमीत्वात्**'' ''**उपोष्या द्वादशी शुद्धेति वचनाद्द्वादश्या एवैएकादशीत्वाच्चरमखण्ड ग्रहणीयाद्**'' - भाव यह है कि जब दशमी एकादशी में लय हो जाती है तो एकादशी को दशमी का अंश मानते हैं। शुद्ध द्वादशी ज्यों की त्यों रहती है। तदनुसार द्वादशी में एकादशी का अंश है। दश तिथियों एवं **श्रीविद्या पंचदशी** के दश अक्षरों का सम्बन्ध दश इन्द्रियों से है, **मन एकादशी है। मन का योग जब तक इन्द्रियों से बना रहता है, तब तक वह उपोष्या नहीं होती अर्थात् वृत्ति बहिर्मुखी रहती है।** बुद्धि द्वादशी, चित्त त्रयोदशी अहंकार चतुर्दशी और महत्तत्व पूर्णिमा है।'' ऐसा ही मत अठारवीं शताब्दी के उद्भट विद्वान श्रीमान् भास्करराय जी आदि का भी है।

व्रतोत्सव पर्व दीपिका में प्रत्येक तिथि के आगे उसकी समाप्ति का समय घण्टा मिनटों में दिया गया है। सर्वसुलभार्थ सर्वार्थ सिद्धि आदि योगों का समय भी घण्टा-मिनटों में ही दिया गया हैं। व्रतोत्सव पर्व दीपिका का मूल आधार केतकी चित्रापक्षीय दृक तुल्य गणित पंचांग ही हैं। प्रतिमास सूर्य संक्रांति की तिथि निरयन सूर्य के आधार पर है। प्राप्त सुझावों के अनुसार प्रत्येक पृष्ठ पर राहुकाल का समय भी दे दिया गया है। पिछली पत्रिका में हमने वेद माता गायत्री के अक्षर पद और गायत्री त्रिपाद आदि का ज्ञान हो ऐसा लिखा तो उस पर प्रकाश डालने के लिए अत्यधिक आग्रह प्राप्त हुए। अतः वेदमाता गायत्री के स्वरूप पर कुछ प्रकाश 'श्रीपीठ - बड़ी हवेली' के आदेश/संदेश/उपदेश स्तंभ में दिया गया है। आशा है धर्मप्रेमी आत्मीय जन लाभान्वित होंगे। श्री हरि गीता में कहते हैं कि-'सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते। (13.13) 'सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयिवर्तते।' (6.31) अर्थात सर्वथा-सब प्रकार से वर्तता हुआ भी ज्ञानी पुरुष, विद्या के प्रभाव से, जीवनकाल में क्षण भर के लिए भी स्वस्वरूप से च्युत नहीं होता और देहपात के अनन्तर उसको देहान्तर रूप पुनर्जन्म प्राप्त नहीं होती, आदिक श्लोकों में जिस विद्या का संकेत किया गया है वह विद्या है-श्रेष्ठ विद्या उत्तम विद्या, शिवत्व की विद्या श्रीविद्या। श्रीविद्या में इस हेतुक प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की सभी तिथियां देवी की नित्याओं को समर्पित की गयी हैं। हेमाद्रि, कालमाधव, स्कन्द पुराणादिक में भी कहा गया है कि-'**अमा षोडशभागेन देवि प्रोक्ता महाकला। सस्थिता परमा माया देहिनां देह धारिणी। अमादि पौर्णमास्यन्ता या एव शशिनः कलाः। तिथियस्ताः समाख्याताः षोडशैव वरानने।' चन्द्रमण्डलस्य षोडश भागेन परिमिता देह धारिणी आधारशक्तिरूपा अमानाम्नी महाकला प्रोक्ता क्षयोदयरहितत्वान्नित्या स्त्रकसूत्रवत् सर्वानुस्यूता तदन्याः पञ्च दश कलाः प्रतिपदादि तिथि विशेष रूपा इति षोडशैव कला स्थितय इति।** इत्यादि के अनुसार 15 तिथि नित्याओं को भी तिथियों के साथ ही दे दिया गया है और अमा

नाम्नी महाकला तो सर्वानुस्यूत है ही। अर्थात् तिथि नित्या जो तिथि काल में वर्तमान है के पश्चात् महानित्या महात्रिपुरसुंदरी का पारायण है। यह आप्त ऋषियों द्वारा प्रकाशित सर्वथा वर्तमान अहोरात्र की 60 घड़ियों में (24×7) तत्व से संयुक्त रहने की विद्या है, जिसे श्रीमद्भगवद गीता '**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते**' कहा गया है। आत्म विद्या, महाविद्या, श्री विद्या, परा विद्या का यह विधान भी तिथियों के सामने तिथि नित्या के रूप में दे दिया गया है।

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के आरम्भ में ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ, श्रीजी मन्दिर (बड़ी हवेली) में प्रति संवत्सर के आरम्भ में आयोजित नवरात्र महोत्सव का आमन्त्रण दिया गया है, जिसे धर्मप्रेमी सत्संगी आत्मीय आमन्त्रण समझें और महोत्सव में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों । ऐसे ही शारदीय नवरात्र महोत्सव का आयोजन आश्विन शुक्ल पक्ष में किया जाता है जिसका विवरण 'तिथि पत्रक' में यथा स्थान दिया है, सभी धर्म प्रेमी/प्रभु प्रेमी जन दोनों महोत्सवों में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों, कल्याण के भागी हों ।

यह व्रतोत्सव-पर्व-दीपिका उद्भट् विद्वान एवं मुमुक्षु ऋषि-परम्परा के पोषक एवं पालक मेरे सद्गुरू **अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री १००८ श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द जी एवं मेरे पितृचरण ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री १००८ श्री सुरेश जी बाबा महाराज - स्वामी रघुनाथानन्द जी** के चरणकमलों में सादर समर्पित है।

'सर्वतन्त्र स्वतन्त्रान् श्री चतुर्वेद कुलगुरुन्।
विद्यागुरुन् श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्यः प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।

भवन्निठः
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस
श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'
एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य
श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता
श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर (बड़ी हवेली)
महाराजश्री की ठेक, गतश्रमटीला, श्रीधाम मथुरा

।। श्री श्रीर्जयति ।।

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

विश्वसृष्टिमान

श्री विश्वप्रबोधकाय भगवते श्री भुवनभास्कराय नमः।।

ज्योतिष्चक्रस्य केन्द्राय जगतः स्थिति रूपिणे। त्रिनेत्र नेत्र रूपाय ग्रहेशाय नमो नमः। अथास्मिन् विक्रमाब्दे सृष्टितो गताब्दाः **1,95,58,85,122** श्री रामरावणयुद्धतो गताब्दाः **8,80,163** एवं च श्रीकृष्णाऽवतारतो गताब्दाः 5,247 कुरुपाण्डव युद्धतो गताब्दाः **5,122 एवं च कालक्रमानुगते श्री विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दाः 2078 श्री बार्हस्पत्यमानेन षष्टि अब्दानां मध्ये ब्रह्माविष्णुरुद्र शिव विंशतिकायां श्री राक्षस नामकीय संवत्सरः।**

विक्रम संवत संख्या	:	2078
संवत नाम	:	राक्षस
संवत वास	:	रजक गृहे
रोहिणी निवास	:	तट
मेघ	:	संवर्त
वर्ष नाम	:	श्रावण
ईस्वी सन्	:	२०२१-२२

आकाशस्थ ग्रहमन्त्रिपरिषद् (दश-विभागाधिकारी)

राजा	:	मंगल
मंत्री	:	मंगल
सस्येश	:	शुक्र
धान्येश	:	बुध
मेघेश	:	चन्द्र
रसेश	:	सूर्य
नीरसेश	:	शुक्र
फलेश	:	चन्द्र
धनेश	:	गुरु
दुर्गेश	:	चन्द्र

‘एते दशाधिकारिणः’

यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्।। वशिष्ठ

।। जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिवकामेश्वर वृहद् गोपाल ।।

अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक निगमागम सार हृदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणों के कुलगुरु प्रातः स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज की ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार से नवरात्र आमंत्रण

वर्तमान पीठाधीश्वर – **श्रीपाद् आचार्य श्रीकांत श्रीजी महाराज**

'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रत्यभिसंविशन्ति । तद् विजिज्ञास्व, तद् ब्रह्म ।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, इत्यादि श्रुत्या उत्पत्ति, स्थिति, संहाराः परं ब्रह्मणा – ब्रह्मात्मशक्त्या भगवत्याः राजराजेश्वर्याः पराम्बा त्रिपुरसुन्दर्याः धर्माः श्रूयन्ते । उत्पत्तिं आश्रित्य कर्मकाण्ड प्रवृत्तिः, स्थितिम् आश्रित्य उपासना मार्गो – भक्तिमार्गो वा संहारम आश्रित्य ज्ञानमार्गो – ज्ञानकाण्डो वा इति च त्रिदेव निर्णये व्याख्यातम् । इदमेव आश्रित्य तस्या च ब्रह्म विष्णु रूद्रादि संज्ञा क्रमेण भवति । मूल अधिष्ठानैक स्वरूपाः पराम्बा भगवत्याः राजराजेश्वर्याः लौकिक लिंगत्रयेण अस्पृष्टम् सच्चिदानन्दैक विग्रहम् पुरातन महर्षीणां बह्वृचाख्य वेदर्षीणां स्थापितस्तथ्यः। **तथापि परतत्वाः परब्रह्मपरमात्मायाः करुणावरुणालयाः मातृ रूपम सर्वत्र सर्वाधिकं पूज्यं शास्त्र सम्मतं च**, तथा 'न मातुः परमस्ति दैवतम् ।' अपराध परम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम। विपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरण युगलमम्बायाः । इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैः मातृरूपेणैव ध्येयत्वं निश्चीयते । त्रिविधदावदग्धानां भव भवन पतितानां पीयूषवर्षैः परित्रातुं बद्ध परिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागति इति च परतत्वबोधनैक धिषणानां चित्संवित्स्वरूप लब्धानां निगमागमादि सार हृदयाणां श्रीविद्यापीठस्य आचार्याणां सम्यक् प्रकारेण विनिश्चितम् । अस्याः पारम्पर्याः देवीपर्व दिनानाम् विशिष्ट महत्वं मन्यते । अस्य क्रमेण सांवत्सरिक नवरात्र महोत्सव अपि अत्यंत महत्वपूर्ण मन्यन्ते ।

अस्मिन महोत्सवे समागत्य गुरूपीठाचार्याणां शुभाशीर्वादं संलभ्य परम पुण्यस्य भाजनं भवन्तु, इति शुभामन्त्रणम् ।

जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है – इत्यादि श्रुति वाक्यों के अनुसार उत्पत्ति, स्थिति और संहार ब्रह्मब्रह्मात्म शक्ति अर्थात् ब्रह्म की सामर्थ्य ब्रह्माभिन्न भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी के ही धर्म जाने जाते हैं । उत्पत्ति द्वारा कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति, स्थिति द्वारा उपासना मार्ग या भक्तिमार्ग और संहार द्वारा ज्ञानमार्ग (ज्ञानकाण्ड) का और तदनुसार त्रिदेवों का निर्णय किया जाता है। इसी आधार पर उसकी ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रादि संज्ञा क्रम से होती है। ब्रह्माण्ड की एकमेव और मूल अधिष्ठान स्वरूपा

पराम्बा भगवती राजराजेश्वरी लौकिक लिंगत्रय भेद से सर्वथा अस्पृष्ट हैं और सच्चिदानन्दैक विग्रह मात्र हैं, यह प्राचीन महर्षियों, वेद दृष्टा बह्वृचाख्य वेद पुरुषों का सुस्थापित सिद्धान्त है । **फिर भी, परतत्व परब्रह्म परमात्मा का मातृ स्वरूप ही यत्र-तत्र-सर्वत्र और सर्वाधिक पूज्य है तथा शास्त्र सम्मत है।**

शास्त्र वाक्य हैं कि - माता से बढ़कर कोई देवता नहीं है । 'कोई माता अपने अपराधी पुत्र की उपेक्षा नहीं करती।' विपत्ति काल में श्रीमाता के चरणों का स्मरण करना चाहिये । इत्यादि प्रमाणों से मातृ रूप के ध्यान का ही निश्चय किया जाता है। त्रिविध तापों से संतप्त भवसागर में पड़े हुए जीवों के उद्धार के लिए अमृतवर्षा करने वाली माँ भगवती के श्री चरणों की शरणागति ही एकमात्र मार्ग है यही सर्वशास्त्र निष्णात परतत्वैक निष्ठ चित्संवित् स्वरूप लब्ध निगमागमादि सार हृदय श्री विद्यापीठ के आचार्यों का दृढ़ निश्चय है । उक्त परम्परा में नवरात्रादिक देवी पर्वों का विशेष महत्व है। इस क्रम में सांवत्सरिक नवरात्र चैत्र नवरात्र पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

इस महोत्सव में सम्मिलित होकर गुरुपीठ के आचार्यों का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर परम पुण्य के भागी बनें । यही हमारा शुभ आमंत्रण है ।

अस्तु .... श्री

सांवत्सरिक (वार्षिक) नवरात्र महोत्सव

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मंगलवार दिनांक 13 अप्रैल 2021 नवरात्रारम्भ

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल द्वितीया बुधवार दिनांक 14 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल तृतीया गुरुवार दिनांक 15 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल चतुर्थी शुक्रवार दिनांक 16 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल पंचमी शनिववार दिनांक 17 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल षष्ठी रविवार दिनांक 18 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल सप्तमी सोमवार दिनांक 19 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.30 बजे

चैत्र शुक्ल अष्टमी मंगलवार दिनांक 20 अप्रैल 2021

महाआरती रात्रि 9.30 बजे

चैत्र शुक्ल नवमी बुधवार दिनांक 21 अप्रैल 2021

महाआरती सायं 7.00 बजे नवरात्र विसर्जन, सरस्वती पूजनम्

महाप्रसाद भण्डारा रात्रि 8.00 बजे से

महाप्रसाद स्थल : यज्ञशाला सत्संग भवन

श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, बड़ी हवेली

महाराज श्री की ठेक, गताश्रम टीला, मथुरा

इस महोत्सव में सम्मिलित होकर गुरुपीठ के आचार्यों का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर परम पुण्य के भागी बनें । यही हमारा शुभ आमंत्रण है ।

भवन्निठः

ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय

अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'

एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ, ज्योतिषाचार्य

श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता

शाखां शिखां च पुण्ड्रं च समयाचारमेव च।
पूर्वैराचरितं कुर्यादन्यथा पतितो भवेत्।। (विष्णु स्मृति)

स्व शाखा, शिखा और तिलक एवं आचार अपने पूर्व पुरुषों (पूर्वजों) द्वारा आचरित ही करना चाहिये और इसमें पूर्व से पूर्व की उत्तरोत्तर प्रकृष्टता है। अर्थात् पिता से अधिक दादा और दादा से परदादा आदि।

मनु महाराज कहते हैं –

'येनास्यपितरो याता येन याताः पितामहाः ।
तेन यायात्सतां मार्गं तेनं गच्छन्न रिष्यते ।'

यदि शास्त्रोक्त मार्ग बहुत से दीखें तो जिस मार्ग पर बाप–दादा–परदादा आदि गये हैं उसी मार्ग से आप भी जायें अर्थात् जो कुछ वे करते आये हैं वही आप भी करें। उस मार्ग से जाने से दु:ख नहीं होता । इसमें बाप–दादा–परदादा आदि की उत्तरोत्तर प्रकृष्टता (Superiority) है।

धर्म एव हन्तो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्म हतो वधीत्।।
न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत्।
अधार्मिकाणां पापानामाशु पश्यन्विपर्ययम्।।
नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति।।
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु।
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः।।

(मनुस्मृति)

आदि प्रजापति भगवान मनुमहाराज कहते हैं कि जो धर्म का नाश करता है उसका नाश धर्म कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म करता है। अतः ह्रासित धर्म नहीं हमारा ह्रास न कर दे इस भय से धर्म का हनन कभी न करना चाहिये अर्थात् अपने स्वाभाविक कर्मों का त्याग कभी न करना चाहिये (जैसे स्वाध्याय, तप और अध्ययन और दान जो ब्राह्मण के कर्म हैं-उनका त्याग ब्राह्मण कदापि न करे)।

पापी अधर्मी की निश्चय ही कुगति होती है ऐसा समझकर पुरुष को चाहिये कि विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म का त्याग कदापि न करें। जैसे बोया हुआ बीज तत्काल ही फल नहीं देता, वैसे ही किया हुआ अधर्म भी तत्काल ही फल नहीं देता, किंतु किया हुआ अधर्म निश्चय ही उसके कर्ता को समूल नष्ट कर देता है। जो कर्ता के जीवन काल में अधर्म का फल नहीं मिलता, तो पुत्र/पौत्रों को मिलता है, बात यह है कि किया हुआ अधर्म उसके कर्ता को बिना फल दिये नहीं छोड़ता। (ऐसा ही धर्म के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये)।

अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक निगमागम सार हृदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणों के कुलगुरु प्रातः स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज की ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार से संदेश

श्री विद्याजयन्ति पर विशेष :

आत्मानं चेद्विजानीयात् अयमस्मीति पुरुषः।
किमच्छन् कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत्।।

(बृहदारण्यकोपनिषद् ४/४/१२)

यः मानवः प्रत्यगात्मानम् आत्मत्वेन जानाति, सः किं फलम् इच्छन कस्य कामस्य प्राप्त्यर्थम् इदं शरीरं अनु संज्ववरेत्।

यह श्रीविद्या का प्रारम्भ है और चरम है उस ज्ञातृ ज्ञान, ज्ञेय, त्रिपुटी की प्रकाशक अभेद स्वरूप परतत्व महाभट्टारिका पराम्बा श्री महात्रिपुर सुदरी से एकत्व। सनातन धर्म की सभी गीताऐं इसी तत्व की ओर संकेत करती हैं। सभी उपनिषदों में जो कि आगम हैं ऋषि परम्परा से प्राप्त हैं, इसी एकमेव तत्व का गान किया गया है। किं बहुना समस्त आस्तिक वैदिक वाङ्मय का तात्पर्य आत्मविद्या, श्रीविद्या में ही है। विश्व में सर्वाधिक प्रसिद्ध श्रीमद्भगवद गीता तो प्रकट ही इस महायोग के गोपन के लिए हुई यथा :-

श्रीभगवान कहते हैं कि –

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ।।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतपः।।
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरानतः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम्।।

(गीता ४/१-३)

सृष्टि के आदि में मैंने इस अविनाशी योग को विवस्वान को कहा था, विवस्वान ने मनु को कहा, मनु ने सूर्यवंशी इक्ष्वाकु के प्रतिकहा था। इस प्रकार परम्परा (आगम) से प्राप्त होते हुए इस योग को राजर्षियों ने जाना, परन्तु हे शत्रुतापी अर्जुन। ये योग काल प्रभाव से इस पृथ्वी लोक में लुप्त हो गया। वह ही प्राचीन और आदिम योग आज मैंने तुझे कहा है और यह योग जो कि उत्तम रहस्य है इस कारण तुझसे कहा है कि तू मेरा भक्त और मित्र है।

वासुदेव ने अर्जुन को जिस आत्मविद्या योग का उपदेश किया था वह है कि –

नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः।।

(गीता २/१६)

जो असत् है उसका अस्तित्व नहीं हो सकता, जो वस्तुतः सत् है उसका अभाव नहीं हो सकता। तथापि इन दोनों का ही अन्त होता है जिसे तत्वदर्शियों ने देखा है।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्य उक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।

(गीता २/१८)

नित्य, अविनाशी, अपरिमेय, अनन्त, अपरिच्छिन्न शरीरधारी आत्मा के ये समस्त शरीर विनाशशील कहे गये हैं, इसलिए हे भरतवंशी अर्जुन! तू युद्ध कर।

न जायते म्रियते वा कदाचित्।
नायंभूत्वा भविता वा न भूयः।।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो।
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

(गीता २/२०)

यह आत्मा कभी भी उत्पन्न नहीं होता और न मरता ही है और न यह कोई ऐसा पदार्थ ही है जो एक बार अस्तित्व धारण करके चले जाने पर फिर कभी भी अस्तित्व धारण न कर सके। यह जन्म रहित, नित्य सनातन, पुरातन है, शरीर की हत्या होने पर यह हत नहीं होता।

इस आत्मतत्व की, आत्म विद्या की दुर्विज्ञेयता बताने के लिए ही श्री भगवान कहते हैं कि –

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम् आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः श्रणोति श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित्।।

कोई मनुष्य इस आत्मा को आश्चर्यमय रूप में देखता है और वैसे ही कोई दूसरा मनुष्य आश्चर्यमय मानकर इसका कथन करता है और दूसरा कोई आश्चर्य मयरूप से इसका श्रवण करता है और कोई ज्ञानी मनुष्य से सुनकर भी इस आत्मा को जानता ही नहीं।

अर्थात् इस आत्मज्ञान/श्री विद्या में प्रवेश केवल ज्ञानवान ही कर पाते हैं और यथार्थ ज्ञानवान का जन्म दुर्लभ है –

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः।।

(श्रीमद् भग.गी.अ. ७/३)

सहस्त्रों मनुष्यों में कोई एकाध ही सिद्धि पाने के लिये यत्न करता है और जो यत्न करते हैं और सिद्धि प्राप्त करते हैं उनमें से कोई विरला ही मुझे मेरे तत्वों के साथ सम्यक रूप से जान पाता है।

भगवान हयग्रीव नारायण ने भी कहा है कि –

चरमे जन्मनि श्रीविद्योपसको भवेत्। (ब्रह्माण्ड पु.)

चरम जन्म में ही कोई विरला तत्वोपासक श्री विद्योपासक होता है।

श्री विद्या का प्रथम पद है परिच्छिन्न अभिनिवेश से स्वयं को मुक्त करना और स्वयं को देश काल वस्तु से अपरिच्छिन्न सत् चित् आनन्द स्वरूप सर्वात्मा जानना।

आगे श्रीविद्या सर्वथा उस तत्व में उस पर तत्व में वर्तमान रहने की विद्या आदिक का निर्देश करती है। श्री भगवान गीता में कहते हैं कि –

सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभि जायते। (१३.२३)
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते। (६.३१)

सब प्रकार से वर्तता हुआ भी ज्ञानी पुरुष विद्या के प्रभाव से, जीवनकाल में क्षणभर के लिए भी अपने स्वरूप से च्युत नहीं होता और देहपात के अनन्तर उसको देहान्तर रूप पुनर्जन्म प्राप्त नहीं होता।

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्यात्मनात्मानं ततो याति परांगतिम्।

समस्त पदार्थ और जीवों में समान भाव से स्थित सम ईश्वर को देखकर अपने द्वारा आत्मा का अनिष्ट नहीं करता, वह परमगति आत्मा की उच्चतम अवस्था को भगवद् भाव को प्राप्त हो जाता है।

श्री भगवान कहते हैं कि –

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म सत्तन्नासदुच्यते।।

(गीता १३.१३)

जो ज्ञेय तत्व है, जिसे जानकर मनुष्य अमृतत्व का उपभोग करता है। वह ज्ञेय अनादि परब्रह्म है, वह न सत् और न असत् कहा जा सकता है।

आदि प्रजापति भगवान मनु महाराज कहते हैं कि –

सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
समं पश्यन्नात्मयाजी स्वाराज्यं अधिगच्छति।।

(मनु स्मृ. १२/६१)

आत्मयाजी पुरुष सब भूतों में आत्मा को तथा आत्मा में सब भूतों को समान देखकर स्वाराज्य सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सर्वोच्च पद पाता है।

महाभारत में उल्लेख है कि जब महाभारत के युद्ध के पश्यात अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से पुनः श्रीमद्भगवतगीता का उपदेश देने का आग्रह किया और कहा कि उस समय युद्ध काल होने के कारण उन्हें श्रीभगवान का दिया हुआ गीतोपदेश विस्मृत हो गया तो श्री भगवान ने कहा कि वह गीतोपदेश उन्होंने स्वरूपभूत होकर दिया था, सनातन ब्रह्मभूत होकर दिया था, जिसे अब वर्णन करना सम्भव नहीं है –

''न च साद्य पुनर्भूयः स्मृतिर्मे सम्भविष्यति।''

(महाभारत, अनुगीता पर्व अध्याय 16)

उपनिषद वचन है कि –

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्।।

(केनोपनिषद २.४)

नाना नाम रूपों में प्रतीयमान चराचर जो यह जगत है, इसमें सर्वत्र अर्थात सभी वस्तुओं में अंतर्यामी रूप से ब्रह्मतत्व विराजमान है। जिस महाभाग्यशाली ने(मतं) ये जान लिया है, वह मोक्ष अर्थात् अमृतत्व को अवश्य प्राप्त करता है। इस मनः संयोग या मन की एकाग्रता रूप बल से सम्पन्न साधक परमात्मसाक्षात्मकार की कारण स्वरूपा ब्रह्मविद्या को प्राप्त कर अमृत–अविनाशी परमात्मा को प्राप्त करता है।

देखो, आत्मा से ही परमात्मा को प्राप्त किया जाता है, श्री भगवान गीता में कहते हैं कि –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

(गीता ६.५)

आत्मा के द्वारा आत्मा को ऊपर उठायें (मुक्त करें), आत्मा को भोग या हठ पूर्वक दमन के द्वारा अधः पतित और खिन्न न होने दें, क्योंकि आत्मा ही आत्मा का मित्र है, आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।

आप्त वाक्य है कि –

इह चेदवेदी दथ सत्यमस्ति। न चेदिहान्वेदीन्महती विनष्टिः भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः। प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

(केनो0 २/५)

यदि व्यक्ति यहीं (इसी लोक में) उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है तो व्यक्ति का अस्तित्व सार्थक है, यदि यहीं उस ज्ञान की प्राप्ति नहीं की, तो महाविनाश है। ज्ञानी जन विविध भूत पदार्थों में उसका विवेचन करके, इस लोक से प्रयाण करने पर अमर हो जाते हैं।

ओं ब्रह्मविदाप्नोति परम। (तैत्तरीय उप.)

ब्रह्म को जानने वाला परम पद को प्राप्त हो जाता है। सृष्टि के आदि में देवासुर संग्राम में पराम्बा की कृपा से जब देवता विजयी हुए तो उन्होंने पराम्बा के दर्शन की इच्छा से अम्बायज्ञ और ब्रह्मचक्र का उद्योग किया इस ब्रह्म चक्र की नाभि स्वयं श्री हरि नारायण बने तथा अन्यान्य देवताओं ने यथा–यथा स्थान लिया। तदन्तर पराम्बा ने प्रसन्न होकर देवताओं को दर्शन दिये और अपने स्वरूप को प्रकाशित किया, पराम्बा कहती हैं कि –

अहमानन्दविस्तारं विधातुं स्वप्रभावतः।
अद्वैत सच्चिदानन्दमयसत्तात् एव वै।।
द्वे दृष्टदृश्यरूपे च यदा सत्ते प्रकाश्य हि।
ब्रह्ममायास्वरूपाभ्यां प्रतीयेऽहं दिवौकसः।।

मैं जब आनन्द के विस्तार के लिए अपने ही प्रभाव से एक अद्वैत सच्चिदानन्दमय सत्ता से, द्रष्टा और दृश्य रूपी दो सत्ता प्रकट करके माया और ब्रह्मरूप से प्रकट होती हूँ।

क्षेत्रं माया स्वरूपेण बीजञ्च ब्रह्मरूपतः।
भूत्वैवाहं तदा देवाः। प्रसुवे निखिलं जगत्।।

उस समय हे देवतागण। ब्रह्मरूप से बीज और माया रूप से क्षेत्र बनकर सकल जगत् को प्रसव करती हूं।

(श्री गीता उपनिषत् ६/१७-१८)

दृष्ट दर्शन दृश्यादिभेदः प्रतीतिकोऽपि वा।
यश्य नोदेति पूर्णात्मा विदेहो मुक्त एव सः।।

दृष्टा दर्शन और दृश्य इन भेदों की प्रतीति भी जिसमें उत्पन्न नहीं होती वही पूर्णात्मा विदेह मुक्त है।

(श्री राम गीता, तत्व सारायणान्तर्गता अध्याय ६/२२)

देखिये, श्रीविद्यान्तर्गत जो परतत्व है वह चित्संवित्स्वरूप है जो कि सत्-चित्-आनन्द के रूप में अभिव्यक्त है, स्पष्ट ही यह दिव्य है और पुरुष, स्त्री आदिक नहीं है किंतु उपासना में सर्वत्र सर्वोच्च परत्व के मातृ स्वरूप का सर्वत्र और सर्वाधिक आदर है और यह आज से नहीं सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, दत्तात्रेय, व्यासदेव, शुकदेव आदिक आप्त महात्माओं का निर्णीत है और भगवान ऋषि व्यास देव के शिष्य पैल मुनि का बह्वचोपनिषत् प्रमाण है कि भारतवर्ष में सभी महर्षियों ने इसी का सम्मान किया है। अतः हम भी पुरातन महात्माओं के मत का सम्मान करते हैं।

बह्वृचोपनिषद् तो घोषणा करता है कि-''**सत्यमेकं ललिताख्यम वस्तुतदद्वितीयमखण्डार्थं परं ब्रह्म।**''- ललिताख़्यान ही एकमात्र सत्य है, वही अद्वितीय अखण्ड परब्रह्मतत्व है ।

इस ललिताख़्यान का वर्णन भगवान हयग्रीव नारायण ने ब्रह्माण्ड पुराण में किया है -

''**भक्तानुग्रहकारणेन ललितं रूपं समासादिता।**'' देखो, चित् संवित अद्वय जो सर्वोच्च परब्रह्म है जो श्री सनकादिक से श्री शुकदेवादि पर्यन्त सबका एकमेव ध्येय है, जिसकी अभिव्यक्ति सत्-चित्-आनंदघनैक रूप में होती है और जो ज्ञातृ ज्ञान ज्ञेय, ध्यातृ ध्यान ध्येय और दृष्ट्रा दर्शन दृश्य इन त्रिपुटियों का अभेद स्वरूप है वे पराम्बा त्रिपुरा भगवान श्री श्रीजी महाराज - भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये स्वयं को ललिताम्बा के रूप में अभिव्यक्त करते हैं । ये जो चिन्मात्र तत्व पराम्बा भगवान श्रीजी महाराज हैं इनके विषय में वर्णन करते हुए बाबा महाराज दो उपनिषद वाक्यों को उद्धृत किया करते थे , महाराज कहते कि -बृहदारण्यक उपनिषद कहता है कि ''**यद्ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो मनुष्या मन्यन्ते, किमु तत्र ब्रह्मावेद् यस्यात् तत् सर्वं भवति ?** - जिस ब्रह्म को जानकर मनुष्य सर्व हो जाता है, उस ब्रह्म ने ऐसा क्या जाना जिससे वह सर्व हो गया ?

पुनः महाराज छान्दोग्य श्रुति उद्धृत करते और कहते कि ''**स एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं जानन्नात्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दस्स एव भवति ।**'' (छान्दोग्य उपनिषद)

उसने स्वयं को आत्मरति आत्ममिथुन एवं आत्मानन्द जाना और वह ऐसा हो गया ।

अजी, सर्वोच्च ब्रह्म उन्हीं भगवान श्रीजी महाराज को जानकर सर्व हुआ, पराभट्टारिका को स्वात्म जानकर, परा भट्टारिका रूप ही हो गया । वह महान परतत्व सर्ग के आदि में स्वभक्तों पर उपासकों पर कृपा करने के लिये स्वयं को श्रीमाता ललिता महात्रिपुरसुन्दरी के रूप में अभिव्यक्त करता है । बाबा महाराज कहते कि सत्यस्वरूप परमात्मा की संवित् अर्थात अनुभूति ही सार रूप है । महाराज कहते कि सत्य को वो जैसा है स्वीकार करना चाहिये , यदि तुम सत्य को भी अपने तरीके से स्वीकार करना चाहते हो तो स्मरण रहे कि तुम सत्य को नहीं सत्य के नाम पर अपने अहंकार को ही महिमामंडित कर रहे हो ।

भगवान ऋषि वेदव्यास कृत अष्टादश पुराणों में से एक ब्रह्माण्ड पुराण के लालितोपाख्यान में इसका विस्तार से वर्णन है कि किस प्रकार भण्डासुर से प्रताड़ित देवों द्वारा पराम्बा की महायाग विधान से उपासना की गयी जिसके फलस्वरूप श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी चिदग्नि से अर्थात विशुद्ध ज्ञानाग्नि से प्रकट हुईं -

'' तां विलोक्य महादेवीं देवाः सर्वे सवासवाः ।

प्रणेमुर्मुदितात्मनो भूयोभूयोऽखिलात्मिकाम ।।''

सृष्टि के आदि में जब देवता तारकासुर से त्रस्त थे तो उन्होंने तारकासुर से मुक्ति पाने हेतु, शिवपुत्र को ही उपाय जानकर । तपस्यारत महादेव को शैलपुत्री देवी पार्वती की ओर आकर्षित करने के लिये कामदेव को प्रेरित किया, कामदेव द्वारा जब यह कार्य किया गया तो शिव के तृतीय नेत्र द्वारा भस्म कर दिये गये । कामदेव के भस्मीभूत विग्रह की वह भस्म बहुत समय तक यथा स्थान ही पड़ी रही तत्पश्चात किसी समय श्री गणेश द्वारा उस भस्म से एक बालक की आकृति बना दी गयी और जैसे ही भगवान शिव की दृष्टि उस बाल आकृति पर पड़ी और वह सजीव हो गयी, यह था गणेश्वर का परम आज्ञाकारी सेवक भंडासुर। भगवान गणेश्वर ने उस बालक को सभी विद्याएं सिखायीं और शतरुद्रीय का उपदेश कर उसे महादेव की उपासना हेतु प्रेरित किया । औघड़दानी महादेव ने शीघ्र ही भण्ड पर कृपा की और उसे पुत्र गणेश का अनन्य सेवक जानकर कुछ भी अदेय न समझा । तब भण्डासुर ने 60,000 वर्ष तक त्रैलोक्य का साम्राज्य मांगा और सबसे महत्वपूर्ण वर अपने प्रतिद्वन्दी का आधा बल और उसके अस्त्र शास्त्रों का अपने ऊपर व्यर्थ होना मांगा, भण्डासुर बोला कि-
''प्रतिद्वन्दीबलार्धम् तु मदबलेनोपयोक्ष्यति । तदस्त्रशस्त्र मुख्यानि वृथा कुर्वन्तु नो मम् ।।'' वृषभध्वज ने कुछ विचार कर भण्डासुर को उसकी इच्छानुसार वरदान प्रदान किये । सम्पत्ति सदैव मद का कारण होती है जब देवराज इंद्र को भी सम्पत्ति का ऐसा मद हो सकता कि वे त्रिलोकीनाथ प्रभु से युद्ध कर सकते हैं तो ये भण्डासुर

तो असुर ठहरा। सो भण्डासुर को भी मद हुआ और श्रीगणेश की अवहेलना कर वह अधर्म पूर्वक शासन करने लगा । इतना ही नहीं, अपने साम्राज्य के संरक्षण के उद्देश्य से उसने देवताओं को समाप्त करना चाहा। त्रिलोकी में त्रिदेवों सहित कोई उसके प्रतिकार को समर्थ न हुआ तो देवताओं ने महायाग क्रम से श्रीमाता त्रिपुरसुन्दरी की उपासना कर चिदग्नि कुंड में स्वात्माहुती देने की सोची । तभी एक महान घोष के साथ अद्‌भुत प्रकाश उत्पन्न हुआ, जिसमें से महाराज्ञी ललिता महात्रिपुरसुन्दरी देवताओं पर कृपा करने के लिये प्रकट हुईं। उन परम कारण स्वरूप श्री माता श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी की स्तुति करते हुए देवता बोले कि –

''**जातस्य जायमानस्य इष्टापूर्त्तस्य हेतवे । नमस्तस्यै त्रिजगतां पालयित्र्यै परात्परे।**'' – जिनका पूर्व में जन्म हो चुका है और जिनका भविष्य में जन्म होगा उन सबकी इष्टापूर्त कामनाओं की पूर्णता की एकमेव कारण सर्वाधिष्ठान स्वरूपा जो त्रिजगत का पालन करती हैं, उन मातृ स्वरूप को नमस्कार है । माता वास्तव में तो ये संसार रचना आपकी क्रीड़ा ही है, अतः हम आपकी शरण में हैं आप दुर्गम दैत्यभण्डासुर की पीड़ा से शीघ्र ही हमें मुक्त करें ।

श्री माता ललिता ने देवताओं को उनके मंतव्यानुसार वरदान दिया और कहा कि –

''**अहमेवविनिर्जित्य भण्ड दैत्य कुलोद्‌भवं । अचिरात्तव दास्यामि त्रैलोक्यम् स चराचरम् ।।**'' – अरे देवताओ मैं शीघ्र ही दैत्यकुलोत्पन्न भण्डासुर को जीतकर तीनों लोकों का राज्य तुम्हें सौंप दूंगी, तुम निर्भय हो जाओ और चक्रराज रथ पर आरुढ़ होकर सपरिकर श्रीमाता ने भण्डासुर से भयङ्कर युद्ध किया और अन्त में भण्डासुर का वध कर देवताओं को निर्भय किया ।

जहां तक कथा के आध्यात्मिक पक्ष की बात है तो बाबा महाराज कहते कि ये भण्डासुर वधाख्यान आध्यात्मिकता के सर्वोच्च तल की कथा है , ये कथा है परम चेतना के अहंकार को विजित कर, स्वस्वरूप चितसंवित् को प्राप्त कर लेने की । वास्तव में ये कथा अद्‌भुत है, एकमेव है ।

देखो, जीव का परिछिन्नत्व स्वयं को देह शरीर देशकाल परिछिन्न मान लेना ही भण्डासुर है । भण्ड, शरीर को भी कहते हैं , कुणपवादी जिसने देह में ही अभिनिवेश मान लिया हो और असुर अर्थात ''**असुषु इन्द्रीयिषु रमन्ते इति असुरः ।**''–जो इन्द्रिय सुख में ही रमण करें वे असुर ।

सो ये भण्डासुर जो आध्यात्मिक रूप से शून्य था और शिव अर्थात स्वात्म के वरदान से गर्वित य इसका निस्तारण विशुद्ध ज्ञानस्वरूपा चिद् संवित अद्वय स्वरूप पराभट्टारिका भगवान श्रीजी महाराज श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी में ही सम्भव था अतः

देवर्षि नारद ने तदनुसार ही श्रीललितम्बा से निवेदन किया था कि– हे माता, ये भण्डासुर नामक दैत्य तीनों लोकों को बाधित कर रहा है। वह दैत्य एक आपके द्वारा ही जीता जा सकता है अन्य किन्ही देवताओं द्वारा नहीं जीता जा सकता **''त्वयैकयैव जेतव्यो न शक्यस्त्वपरैः सुरैः ।''**

अतः अपने आध्यात्मिक स्वरूप में इस भण्डासुर वधाख्यान का तात्पर्य जीव की परम चेतना का परिछिन्नत्व पर विजय प्राप्त कर अपने अपरिछिन्न शुद्ध ज्ञानस्वरूप में विलीन हो जाना है । एकमात्र यही इसके देह धारण की सार्थकता है, अन्यथा महान आत्मविनाश –

''इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति। न चेदीहावेदीन्महती विनष्टिः।''

(केनोपनिषद)

उत्तिष्ठ मा स्वप्त अग्निमिच्छध्वं भारताः ।

राज्ञः सोमस्य तृप्तासः सूर्येण सयुजोषसः । (अरुणोपनिषद्)

जागृत सुप्त न हो, ज्योति प्रसन्न हो, कामनाओं अथवा इच्छाओं को भस्म करो, अमृत ग्रहण करो तथा शिव के साथ मिलन करो जो उमा के साथ रमण कर रहे हैं और इसमें सूर्य अग्नि की सहायता लो ।

हे श्री विद्योपासकाः, उत्तिष्ठत उपास्तिक्रमे प्रवर्तध्वम् । मा स्वप्त प्रमत्ता मा भूत, अन्तर्भावितव्यथौ वा कुण्डलिनीमिच्छध्वं इच्छादण्डे नाहत्येत्थापय ध्वम् । सूर्येण सयुजाविशुद्धयनाहत् चक्रयोर्मध्यवर्ति सूर्य सहितेन तेनाग्निना। उषसो दग्धस्य द्रुतस्येति यावत् । सोमस्य उमया राजराजेश्वर्या सहितस्य राज्ञो राजराजेश्वरस्य सहस्रारीयचन्द्रमण्डलान्तर्गतस्य वा । अर्थादमृतेन तृप्तासो भवत तृप्यत । अग्निकुण्डलिनीमुत्थाप्य सूर्यकुण्डलिन्या संयोज्य ताभ्यां चन्द्रमण्डल शिवशक्तिसामरस्येन द्रावयित्वातदुत्थामृतधाराभिर्द्विसप्ततिसहस्र नाडी मार्गानापूर्य तृप्ता भवतेत्यर्थः।

हे श्रीविद्योपासक उठो, अपनी निष्ठा में दृढ़ रहो । प्रमाद में मत पड़ो जागृत रहो, जिससे कुण्डलिनी जागृत रहे । सुप्त न हो, उसे भी सुप्त न होने दो । अग्नि – स्वाधिष्ठान की अग्नि इसे कुण्डलिनी में रूपान्तरित करो । इच्छा अर्थात् इसे अपनी इच्छा शक्ति से ऊर्ध्व करो । सूर्य अग्नि की सहायता से अर्थात् सूर्य जो अनाहत विशुद्धि के बीच में है और अग्नि जिसके साथ है । परम शिव चन्द्रविम्ब में उमा के साथ है। अर्थात् कुण्डलिनी अग्नि को प्रज्वलित कर तथा कुण्डलिनी को सूर्य के साथ एक कर तथा इन दोनों को चन्द्रबिम्ब तक पहुंचाकर फिर शिव तथा शक्ति के साथ मिलन करा देते हैं। तब इस मिलन के परिणाम स्वरूप 72 हजार नाड़ियाँ अमृत की धाराओं से पुष्ट हो जाती हैं।

वेदमाता गायत्री/सावित्री

'गायंतस्त्रायसे देवि तद्गायत्रीति गद्यसे ।'

जो प्राणों की रक्षा करती है, जिसके सद्अनुष्ठान से जीवन जीवन बनता है, जो गाने वालों की, उसका निरन्तर अभ्यास करने वालों की त्रिविध ताप से रक्षा करती है, वह गायत्री है।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। (ऋग्वेद 3 ।62 ।10)

ये गायत्री मंत्र है इस गायत्री मंत्र के तीन पाद और २४ अक्षर हैं। गायत्री के तीन पाद हैं –

प्रथम पाद है : ''भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षर ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु ह वास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद।'' (वृह0 5 ।14 ।1)

भूमि अंतरिक्ष, द्यौ ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के प्रथम पाद में भी आठ अक्षर हैं, 'वरेण्यम्' के स्थान में 'वरणीयम्' समझने से आठ अक्षर पूरे हो जाते हैं । अर्थात् तीनों लोक गायत्री का प्रथम पाद हैं । **बृहदारण्यकी श्रुति है कि वह तीनों लोकों को जीतता है जो गायत्री के लोकत्रयी रूप इस प्रथम पाद की उपासना करता है।**

द्वितीय पाद है : 'ऋचो यजूंषि सामानि ।'

ये आठ अक्षर हैं, गायत्री के द्वितीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् तीनों वेद गायत्री का द्वितीय पाद है । बृहदारण्यकी श्रुति है कि **वह वेदत्रयी के सम्पूर्ण फल को प्राप्त करता है जो गायत्री के वेदत्रयी रूप द्वितीय पाद की उपासना करता है।**

तृतीय पाद है : 'प्राणापान व्यान'

ये आठ अक्षर हैं । गायत्री के तृतीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी गायत्री के तृतीय पाद में आते हैं। **बृहदारण्यकी श्रुति है कि जो इस प्रकार उपासना करता है वह सम्पूर्ण प्राणियों को जीतता है।**

गायत्री का चौथा पाद तुरीय स्वरूप है जो रज तम आदि से पर दर्शनीय पद ब्रह्मरूप है । यही सर्वान्तरात्मा सूर्यादि रूप होकर सबके ऊपर तपता है । **श्रुति कहती है कि वह इसी प्रकार श्री तथा यश से तपता है जो गायत्री के इस तुरीयपाद की उपासना करता है।**

भगवान ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि –

भूर्भुवः स्वरिति चैव चतुर्विंशाक्षरा तथा ।

गायत्री चतुरो वेदा ओंकारः सर्वमेव तु ।। (ब्र0 यो0 याज्ञ0 2।66)

भूर्भुवः स्वः ये तीन महाव्याहृतियां, चौबीस अक्षर वाली गायत्री तथा चारों वेद निस्संदेह ओंकार स्वरूप हैं।

ऋषि कहते हैं कि –

ब्रह्म गायत्रीति – ब्रह्मवै गायत्री ।

(शत0 ब्रा0 8।5।3।7 एत0 ब्रा0 अ0 17 ख0 5)

ब्रह्म गायत्री है, गायत्री ही ब्रह्म है ।

गायत्री परदेवतेति गदिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी । (गायत्री पु0)

गायत्री परम श्रेष्ठ देवता और चित्त रूपी ब्रह्म है।

सैषा गायत्र्यै तस्मिस्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम्। (बृ0 5।14।4)

श्रुति कहती है कि **यह लोक त्रयी, वेदत्रयी, सर्वप्राणस्वरूप – त्रिपदा गायत्री इस चतुर्थ तुरीय पद में प्रतिष्ठित है इस प्रकार तुरीय चेतन रूप यह गायत्री प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्वयं ज्योतिः प्रत्यगात्मा रूप से स्थित है।**

इसका अर्थ यह हुआ कि लोकत्रयी वेदत्रयी और प्राणत्रयी वेद माता से ही उत्पन्न हैं –

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी ।

गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ।। (याज्ञ0 स्मृ0)

गायत्री वेद जननी है, पातक हारिणी है इससे अधिक पवित्र वस्तु दिव्यलोक और संसार में कोई भी नहीं है।

'गायत्री छन्दसां मातेति ।' (महा0 नारायणोपनिषद 15।1)

'गायत्री वेद माता हैं ।'

'गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किंच.... । (छा0 3।12।1)

यह सारी सृष्टि गायत्री ही है अथवा दृश्यमान जगत् की सारी सृष्टि में चर-अचर जो कुछ है, गायत्री हैं ।

आयाहि वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी ।

गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ।

ओम् गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि

पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापदिति ।

(बृ0 5।14।6)

हे गायत्री ! त्रैलोक्य पाद से तुम एक पाद वाली हो, त्रयी विद्या रूप द्वितीय पाद से द्विपदी हो, प्राणादि तृतीय पाद से तुम त्रिपदी हो, तुरीय रूप चतुर्थ पाद से तुम चतुष्पदी हो अर्थात् तुम्हारे अनेक पाद हैं ।

जपनीय गायत्री मंत्र के सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं कि –

ओंकारपूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ।।
योऽधीतेहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान ।। (मनु0 2।81–82)

ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री मन्त्र का जप ब्रह्म प्राप्ति का द्वार है। जो अधिकारी प्रतिदिन ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री का नियम से तीन वर्ष पर्यन्त जप करता है वह अवश्य ही ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वह वायु की तरह कामचारी होता है एवं ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त होता है।

धर्मराज युधिष्ठिर कहते हैं कि जो ब्राह्मण प्रातः और सायं दोनों संध्याओं में वेदमाता गायत्री का जप करता है वह विधूत कल्मष हो जाता है। प्रतिग्रह के, दान लेने के, सभी दोषों से मुक्त हो जाता है, **उसकी पापमयी मनोवृत्तियों का नाश होता है।**

विधि यज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।
उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः ।। (मनु0 2।85)

दर्श पौर्णमासादि यज्ञ से प्रकृत प्रणवादि सहित गायत्री मन्त्र का जप दश गुना अधिक फल देता है । यह जप भी यदि उपांशु (जिसमें होठ न हिलें, केवल जिव्हा साध्य हो) तो शतगुणाधि फलदायी होता है । और केवल मानस हो तो सहस्रगुना अधिक फल देने वाला होता है।

मनु महाराज आज्ञा करते हैं कि ब्राह्मण यदि प्रतिदिन कम से कम एक सहस्र (1000) गायत्री का जप करे तो एक मास में ही अभीष्ट सिद्धि को पाता है ।

महर्षि विश्वामित्र मंत्र का अर्थ करते हुए कहते हैं कि –

देवस्य सवितुर्यस्य धियो यो नः प्रचोदयात् ।
भर्गो वरेण्यं तद् ब्रह्म धीमहीत्यथ उच्यते ।। (विश्वामित्र)

''उस तेजस्वी ब्रह्म का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करता है ।''

सूर्याघ्र्य विधि

भगवान आश्वालायन के अनुसार सूर्याघ्र्य दर्भपाणि अर्थात् हाथ में कुश लिए हुए जल से भरी अंजली को सूर्य के अभिमुख खड़े होकर ओंकार और व्याहृतियों के साथ सावित्री मन्त्र से तीन बार (अतिकाल होने पर चार बार) निवेदित करना चाहिए।

'असावादित्यो ब्रह्म ।' कहते हुए अर्घ्य देना चाहिए ।

यह आदित्य ही ब्रह्म है इसलिए प्रदक्षिणा पूर्वक घूमते हुए अर्घ्य जल का श्रद्धा से स्पर्श करना चाहिए । यही अर्घ्य निवेदन करना है ।

गायत्री ध्यानम् (जप पूर्व उपस्थान)

मुक्ता, विद्रुम, हेम, नील, धवलच्छायैर्मुखैः तीक्ष्णैः ।
युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ।।
गायत्री वरदाभयांकुशकशा शुभ्रंकपालं गुणं ।
शखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे ।।

माँ गायत्री पांच मुख वाली हैं - मुक्ता अर्थात् मोती जैसा विद्रुम अर्थात् मूंगे जैसा, हेम अर्थात् सुवर्ण जैसा, नीलमणि जैसा, और धवल अर्थात् स्वच्छ । आपके तीन नेत्र हैं । आपके रत्न जटित मुकुट पर चन्द्रमा हैं और आपका श्री विग्रह मन्त्र वर्णात्मक है । वरद, अभय, अंकुश, कशा, शूल, कपाल, गुण, शंख, चक्र और कमल क्रमशः जिनके दायें और बांये हाथों में सुशोभित है उन वेदमाता ब्रह्मजननी माता गायत्री का में भजन करता हूँ आह्वान करता हूँ।

।। सावित्र्यै नमः ।। गायत्र्यै नमः ।।

भगवदाश्रित
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस
श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'
एम.ए. (संस्कृत) साहित्य तीर्थ, ज्योतिषाचार्य
श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021–22

चैत्र (मधुश्री) शुक्ल पक्ष वसन्त–ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तरायण–उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	10.18	मंगल	अश्विनी	अं कामेश्वरी	13.04.21	मेष	श्रीनववर्षारम्भ, कलशस्थापन, श्रीमाता शयनोत्सव आरम्भः, नवरात्रारम्भ श्रीपीठ, श्रीधाम मथुरा, वासन्त चक्रान्तर्गत, गुडी पड़वा, मेष संक्रान्ति (विषुव संज्ञक) 26.33, वैशाखी, झूलेलाल जयन्ती, मिथुन में मंगल 26.14, सर्वार्थ सिद्धि योग 14.16 तक।
द्वितीया	12.47	बुध	भरणी	आं भगमालिनी	14.04.21	वृष 24.09	संक्रान्ति पुण्यकाल, सर्वार्थ सिद्धि योग 17.21 से, हरिद्वार कुम्भ प्रमुख स्नान।
तृतीया	15.27	गुरु	कृतिका	इं नित्यक्लिन्ना	15.04.21	वृष	श्री मत्स्य जयन्ती, सौभाग्य तृतीया, गणगौर पूजन, भद्रा 28.49 से
चतुर्थी	18.05	शुक्र	रोहिणी	ईं भेरुण्डा	16.04.21	वृष	श्री गणेश दमनक चतुर्थी, भद्रा 18.05 तक, मेष में बुध 20.57
पंचमी	22.32	शनि	मृगशिरा	उं वह्निवासिनी	17.04.21	मिथुन 13.06	श्री पंचमी, देवीपर्व
षष्ठी	22.34	रवि	आर्द्रा	ऊं महावज्रेश्वरी	18.04.21	मिथुन	श्री यमुनाषष्ठी महोत्सव, यमुनापूजनम् स्कन्दषष्ठी
सप्तमी	24.01	सोम	पुनर्वसु	ऋं शिवदूती	19.04.21	कर्क	भद्रा 24.01 से, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ, शुक्र उदय 24.20, सप्तमी पूजनम्
अष्टमी	24.03	मंगल	पुनर्वसु	ऋृं त्वरिता	20.04.21	कर्क	श्री दुर्गाष्टमी, निशीथ पूजनम्, महाआरती रात्रि 09.30 बजे, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, अशोकाष्टमी, भद्रा 12.22 तक
नवमी	24.35	बुध	पुष्य	लृं कुलसुन्दरी	21.04.21	कर्क	श्री दुर्गाष्टमी पूजा श्री तारा जयन्ती महोत्सव, नवमी पूजनम्, नवरात्र विसर्जनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, महाआरती, नवरात्र विसर्जन, ब्राह्मण भोजनम् (भण्डारा), श्री रामनवमी व्रत श्रीमाता शयनोत्सवः
दशमी	23.35	गुरु	आश्लेषा	लॄं नित्या	22.04.21	सिंह 08.14	श्री धर्मराज दशमी, वसुन्धरा रक्षण दिवस
एकादशी	21.47	शुक्र	मघा	एं नीलपताका	23.04.21	सिंह	कामदा एकादशी व्रत, भद्रा 20.41 से 21.47 तक
द्वादशी	19.17	शनि	पूर्वा फाल्गुनी	ऐं विजया	24.04.21	कन्या 11.51	हरिदमनोत्सव, विष्णुद्वादशी, प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	16.12	रवि	हस्त	ओं सर्वमंगला	25.04.21	कन्या	अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 25.53 तक
चतुर्दशी	12.44	सोम	चित्रा	औं ज्वालामालिनी	26.04.21	तुला 12.29	शिवदमनक चतुर्दशी, पूर्णिमाव्रतं, भद्रा 12.44 से 22.53 तक
पूर्णिमा	09.01	मंगल	स्वाति	अं चित्रा	27.04.21	तुला	श्री हनुमान जयन्ती, चैत्री पूर्णिमा, देवीपर्व, वैशाख स्नान प्रारंभ

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	13.04.21	06.01	18.38
अष्टमी	20.04.21	05.54	18.42
पूर्णिमा	27.07.21	05.47	18.46

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

वैशाख (माधव) कृष्ण पक्ष ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	29.14	मंगल	-	-	-	-	प्रतिपदा क्षय
द्वितीया	25.34	बुध	विशाखा	अं चित्रा+ औं ज्वालामालिनी	28.04.21	वृश्चिक 11.56	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 17.12 से
तृतीया	22.09	गुरु	अनुराधा	ओं सर्वमंगला	29.04.21	वृश्चिक	भद्रा 11.51 से 22.09, सर्वार्थ सिद्धि योग 14.28 तक
चतुर्थी	19.09	शुक्र	ज्येष्ठा	ऐं विजया	30.04.21	धनु 12.07	वैशाखी चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.45 वृष में बुध 09.42
पंचमी	16.41	शनि	मूल	एं नीलपताका	01.05.21	धनु	
षष्ठी	14.50	रवि	पूर्वाषाढ़ा	लॄं नित्या	02.05.21	मकर 14.49	भद्रा 14.50 से 26.14 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.58 से
सप्तमी	13.39	सोम	उत्तराषाढ़ा	लृं कुलसुन्दरी	03.05.21	मकर	कालाष्टमी, देवी पर्व
अष्टमी	13.10	मंगल	श्रवण	ॠंत्वरिता	04.05.21	कुम्भ 20.47	शीतला पूजा बूढ़ा बासोड़ा, पंचक प्रारंभ 20.47 से, वृष में शुक्र 13.26
नवमी	13.21	बुध	धनिष्ठा	ऋं शिवदूती	05.05.21	कुम्भ	भद्रा 25.45 से, चण्डिक नवमी
दशमी	14.10	गुरु	शतभिषा	ऊं महावज्रेश्वरी	06.05.21	कुम्भ	भद्रा 14.10 तक
एकादशी	15.32	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	उं वह्निवासिनी	07.05.21	मीन 05.57	बरूथिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती
द्वादशी	17.20	शनि	उत्तरा भाद्रपदी	ईं भेरुण्डा	08.05.21	मीन	वैशाख द्वादशी, प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	19.30	रवि	रेवती	इं नित्यक्लिन्ना	09.05.21	मेष 17.28	पंचक समाप्त 17.28, भद्रा 19.30 से
चतुर्दशी	21.55	सोम	अश्विनी	आं भगमालिनी	10.05.21	मेष	
अमावस्या	24.29	मंगल	भरणी	अं कामेश्वरी	11.05.21	मेष	देव-पितृकार्ये अमावस्या, श्री शुकदेव जयन्ती, वेदान्त उपनिषद पाठ, श्रीपीठ, बड़ी हवेली, सर्वार्थ सिद्धि योग 17.28 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	28.04.21	05.46	18.47
अष्टमी	04.05.21	05.43	18.50
अमा.	11.05.21	05.38	18.54

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021–22

वैशाख (माधव) शुक्ल पक्ष ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तरायण–उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	27.06	बुध	कृतिका	अं कामेश्वरी	12.05.21	वृष 06.17	पाराशर ऋषि जयन्ती, पाराशर गीता पाठ–पाराशर स्मृति, सर्वार्थ सिद्धि योग
द्वितीया	अहोरात्र	गुरु	रोहिणी	आं भगमालिनी	13.05.21	वृष	चन्द्रदर्शन, रोहिणी व्रत शिवाजी जयन्ती
द्वितीया	05.38	शुक्र	रोहिणी	आं भगमालिनी	14.05.21	मिथुन	श्री परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादि, श्री मातंगी महाविद्या जयन्ती, वृष संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 23.25
तृतीया	07.59	शनि	मृगशिरा	इं नित्यक्लिन्ना	15.05.21	मिथुन	भद्रा 21.10 से
चतुर्थी	10.01	रवि	आर्द्रा	ईं भेरुण्डा	16.05.21	मिथुन	भद्रा 10.01 तक
पंचमी	11.34	सोम	पुनर्वसु	उं वह्निवासिनी	17.05.21	कर्क 06.49	श्री आदिशंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.21 से
षष्ठी	12.32	मंगल	पुष्य	ऊं महावज्रेश्वरी	18.05.21	कर्क	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती सर्वार्थ सिद्धि योग 14.54 से
सप्तमी	12.50	बुध	अश्लेषा	ऋं शिवदूती	19.05.21	सिंह	श्री गंगा सप्तमी भद्रा 12.50 से 24.36 तक
अष्टमी	12.22	गुरु	मघा	ॠं त्वरिता	20.05.21	सिंह	देवी श्री बगलामुखी महाविद्या जयन्ती, श्री जानकी नवमी
नवमी	11.10	शुक्र	पूर्वा फा0	लृं कुलसुन्दरी	21.05.21	कन्या 21.02	
दशमी	09.15	शनि	उत्तरा फा0	लॄं नित्या	22.05.21	कन्या	भद्रा 19.58 से
एकादशी	06.42	रवि	हस्त	एं नीलपताका + ऐं विजया	23.05.21	तुला 22.49	मोहिनी एकादशी व्रत, त्रिस्पर्शा भद्रा 06.42 तक
द्वादशी	27.38	रवि	–	–	–	–	द्वादशी क्षय
त्रयोदशी	24.11	सोम	चित्रा	ओं सर्वमंगला	24.05.21	तुला	सोम प्रदोषव्रत, श्री छिन्नमस्ता महाविद्या जयन्ती
चतुर्दशी	20.29	मंगल	स्वाति	औं ज्वालामालिनी	25.05.21	वृश्चिक 22.54	श्री नृसिंह चतुर्दशी, देवी, पूर्णिमा व्रत, श्री कूर्म जयन्ती, रोहिणी तपनकाल प्रारंभ, भद्रा 20.29 से
पूर्णिमा	16.43	बुध	अनुराधा	अं चित्रा	26.05.21	वृश्चिक	सत्यव्रत, श्री बुद्ध जयन्ती, भद्रा 06.36 तक, वैशाख स्नान पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	12.05.21	05.37	18.54
अष्टमी	20.05.21	05.33	18.59
पूर्णिमा	26.05.21	05.30	19.02

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ९।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	९।० से १०।३०

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रर्शार्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

ज्येष्ठ (शुक्रश्री) कृष्ण पक्ष ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तरायण-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	13.02	गुरु	ज्येष्ठा	अं चित्रा	27.05.21	धनु 22.26	इष्टिः
द्वितीया	09.36	शुक्र	मूल	औं ज्वालामालिनी	28.05.21	धनु	श्री नारद जयन्ती, नारद गीता पाठ, वीणा दान, भद्रा 20.04 से, मिथुन में शुक्र 23.59
तृतीया	06.33	शनि	पूर्वाषाढ़ा	ओं सर्वमंगला	29.05.21	मकर 23.42	गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.31, भद्रा 06.33 तक
चतुर्थी	28.03	शनि	–	–	–	–	चतुर्थी क्षय
पंचमी	26.12	रवि	उत्तराषाढ़ा	ऐं विजया	30.05.21	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 16.00 तक
षष्ठी	25.05	सोम	श्रवण	एं नीलपताका	31.05.21	कुम्भ 28.03	भद्रा 12.55 से पंचक प्रारम्भ 28.03
सप्तमी	24.46	मंगल	धनिष्ठा	लॄं नित्या	01.06.21	कुम्भ	भद्रा 12.55 तक, बुधास्त 19.31
अष्टमी	25.12	बुध	शतभिषा	लृं कुलसुन्दरी	02.06.21	कुम्भ	कर्क में मंगल 06.51, वक्री वृष में बुध 26.11, कालाष्टमी, देवी पर्व
नवमी	26.12	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी	ॠं त्वरिता	03.06.21	मीन 12.10	आर्द्रायां शुक्रः 10.51
दशमी	28.07	शुक्र	उत्तरा भाद्रपदी	ऋं शिवदूती	04.06.21	मीन	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 20.46 से, भद्रा 15.14 से 28.07 तक
एकादशी	अहोरात्र	शनि	रेवती	ऊं महावज्रेश्वरी	05.06.21	मेष 23.27	पंचक समाप्त 23.27, एकादशी अपरा 11
एकादशी	06.19	रवि	अश्विनी	उं वह्निवासिनी	06.06.21	मेष	एकादशी व्रत
द्वादशी	08.49	सोम	अश्विनी	ईं भेरुण्डा	07.06.21	मेष	सोम प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	11.24	मंगल	भरणी	इं नित्यक्लिन्ना	08.06.21	वृष 12.22	भद्रा 11.24 से 24.41 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.35 से
चतुर्दशी	13.58	बुध	कृतिका, 08.34 तक रोहिणी	आं भगमालिनी	09.06.21	वृष	रोहिणी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग
अमावस्या	16.22	गुरु	रोहिणी	अं कामेश्वरी	10.06.21	मिथुन 25.06	देवपितृकार्ये अमावस्या, वटसावित्री व्रत, शनि जयन्ती, संत ज्ञानेश्वर जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	28.04.21	05.46	18.47
अष्टमी	04.05.21	05.43	18.50
अमा.	11.05.21	05.38	18.54

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

ज्येष्ठ (शुक्रश्री) शुक्ल पक्ष ग्रीष्म-वर्षा ऋतु सूर्य उत्तर-दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	18.30	शुक्र	मृगशिरा	अं कामेश्वरी	11.06.21	मिथुन	करवीर व्रत
द्वितीया	20.17	शनि	आर्द्रा	आं भगमालिनी	12.06.21	मिथुन	चन्द्रदर्शन
तृतीया	21.40	रवि	पुनर्वसु	इं नित्यक्लिन्ना	13.06.21	कर्क 12.29	रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 19.00 से
चतुर्थी	22.34	सोम	पुष्य	ईं भेरुण्डा	14.06.21	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग 20.35 तक, श्री गुरु अर्जुनदेव पुण्यतिथि
पंचमी	22.56	मंगल	आश्लेषा	उं वह्निवासिनी	15.06.21	सिंह 21.41	मिथुन संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 06.00, सर्वार्थ सिद्धि योग 21.41 तक
षष्ठी	22.45	बुध	मघा	ऊं महावज्रेश्वरी	16.06.21	सिंह	जामित्र षष्ठी, अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा
सप्तमी	21.59	गुरु	पूर्वा फाल्गुनी	ऋं शिवदूती	17.06.21 26.03	कन्या	भद्रा 21.59 से
अष्टमी	20.39	शुक्र	उत्तरा फाल्गुनी	ॠं त्वरिता	18.06.21	कन्या	श्री धूमावती महाविद्या जयन्ती, भद्रा 09.19 तक
नवमी	18.45	शनि	हस्त	लृं कुलसुन्दरी	19.06.21	कन्या	महेश नवमी
दशमी	16.21	रवि	चित्रा	लॄं नित्या	20.06.21	तुला 07.37	श्री गंगा दशहरा, श्री बटुक भैरव जयन्ती, भद्रा 26.56 से
एकादशी	13.31	सोम	स्वाति	एं नीलपताका	21.06.21	तुला	निर्जला एकादशी व्रत, भद्रा 13.31 तक, वर्षा ऋतु प्रारंभ, रवि दक्षिणायने, विश्व योग दिवस
द्वादशी	10.21	मंगल	विशाखा	ऐं विजया	22.06.21	वृश्चिक 08.57	प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी, मार्गी बुध 27.30, कर्क में शुक्र 14.20, सावित्री व्रत प्रारम्भ
त्रयोदशी	06.59	बुध	अनुराधा	ओं सर्वमंगला+ औं ज्वालामालिनी	23.06.21	वृश्चिक	भद्रा 27.32 से, सर्वार्थ सिद्धि-अमृत सिद्धि योग 11.47 तक
चतुर्दशी	27.32	बुध	-	-	-		-चतुर्दशी क्षय
पूर्णिमा	24.09	गुरु	ज्येष्ठा	अं चित्रा	24.06.21	धनु 09.10	वटसावित्री व्रत पूर्ण, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, श्री कबीर जयन्ती भद्रा 13.50 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	11.06.21	05.28	19.10
अष्टमी	18.06.21	05.28	19.12
पूर्णिमा	24.06.21	05.30	19.14

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

आषाढ़ (शुचिश्री) कृष्ण पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	20.59	शुक्र	मूल	अं चित्रा	25.06.21	धनु	गुरु हरगोविन्द सिंह जयन्ती
द्वितीया	18.11	शनि	उत्तराषाढ़ा	औं ज्वालामालिनी	26.06.21	मकर 09.57	सर्वार्थ सिद्धि योग 26.35 से, भद्रा 29.03 से
तृतीया	15.54	रवि	श्रवण	ओं सर्वमंगला	27.06.21	मकर	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.01, भद्रा 15.54 तक
चतुर्थी	14.16	सोम	धनिष्ठा	ऐं विजया	28.06.21	कुम्भ 13.04	पंचक प्रारंभ 13.04
पंचमी	13.23	मंगल	शतभिषा	एं नीलपताका	29.06.21	कुम्भ	आश्लेषायां भौमः 07.28
षष्ठी	13.18	बुध	पूर्वा भाद्रपदी	लॄं नित्या	30.06.21	मीन 19.47	भद्रा 13.18 से 25.40 तक
सप्तमी	14.01	गुरु	उत्तरा भाद्रपदी	लृं कुलसुन्दरी	01.07.21	मीन	कालाष्टमी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.48 से, देवी पर्व
अष्टमी	15.28	शुक्र	रेवती	ॠं त्वरिता	02.07.21	मीन	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग
नवमी	17.30	शनि	रेवती	ऋं शिवदूती	03.07.21	मेष 06.13	पंचक समाप्त 06.13
दशमी	19.55	रवि	अश्विनी	ऊं महावज्रेश्वरी	04.07.21	मेष	भद्रा 06.42 से 19.55 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.04 तक
एकादशी	22.30	सोम	भरणी	उं वह्निवासिनी	05.07.21	वृष 18.58	योगिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	25.02	मंगल	कृतिका	ईं भेरुण्डा	06.07.21	वृष	पक्षवर्धिनी महाद्वादशी, रोहिणी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 15.19 तक
त्रयोदशी	27.20	बुध	रोहिणी	इं नित्यक्लिन्ना	07.07.21	वृष	प्रदोष व्रत, मिथुन में बुध 11.05, सर्वार्थ सिद्धि योग, भद्रा 27.20 से
चतुर्दशी	29.16	गुरु	मृगशिरा	आं भगमालिनी	08.07.21	मिथुन-07.38	भद्रा 16.18 तक
अमावस्या	अहोरात्र	शुक्र	आर्द्रा	अं कामेश्वरी	09.07.21	मिथुन	देव-पितृकार्ये अमावस्या
अमावस्या	06.46	शनि	पुनवर्सु	अं कामेश्वरी	10.07.21	कर्क 18.34	अमावस्या, विश्व योग दिवस, शनि शिंगनापुर मेला

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	25.06.21	05.30	19.14
अष्टमी	02.07.21	05.32	19.14
अमा.	10.07.21	05.35	19.13

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

आषाढ़ (शुचिश्री) शुक्ल पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	07.47	रवि	पुष्य	अं कामेश्वरी	11.07.21	कर्क	गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ, देवीपर्व, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.11 तक
द्वितीया	08.19	सोम	अश्लेषा	आं भगमालिनी	12.07.21	सिंह 27.13	श्री जगन्नाथ रथयात्रा
तृतीया	08.24	मंगल	मघा	इं नित्यक्लिन्ना	13.07.21	सिंह	भद्रा 20.13 से, श्री वल्लभाचार्य पुण्यतिथि
चतुर्थी	08.02	बुध	पूर्वा फा0	ईं भेरुण्डा	14.07.21	सिंह	भद्रा 08.02 तक
पंचमी	07.16	गुरु	उत्तरा फाल्गुनी	उं वह्निवासिनी	15.07.21	कन्या 09.36	श्री स्कन्द कुमार षष्ठी
षष्ठी	06.06	शुक्र	हस्त	ऊं महावज्रेश्वरी +ऋं शिवदूती	16.07.21	कन्या	भद्रा 28.34 से, विवस्वान सप्तमी, कर्क संक्रान्ति (याम्यायन संज्ञक) 16.54
सप्तमी	28.34	शुक्र	–	–	–	–	सप्तमी क्षय
अष्टमी	26.41	शनि	चित्रा	ॠं त्वरिता	17.07.21	तुला 14.03	श्री पार्वती जयन्ती, भद्रा 15.38 तक, सर्वार्थ-सिद्धि योग 25.31 से
नवमी	24.28	रवि	स्वाति	लृं कुलसुन्दरी	18.07.21	तुला	भडली नवमी, अबूझ मुहूर्त दिवस, गुप्त नवरात्रि पूर्ण
दशमी	21.59	सोम	विशाखा	लॄं नित्या	19.07.21	वृश्चिक 16.51	रथवापिसी (पुरी)
एकादशी	19.17	मंगल	अनुराधा	एं नीलपताका	20.07.21	वृश्चिक	देवशयनी एकादशी व्रत, विष्णुशयनोत्सव, सिंह में मंगल 17.55
द्वादशी	16.26	बुध	ज्येष्ठा	ऐं विजया	21.07.21	धनु 18.29	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	13.32	गुरु	मूल	ओं सर्वमंगला	22.07.21	धनु	
चतुर्दशी	10.43	शुक्र	पूर्वाषाढ़ा	औं ज्वालामालिनी	23.07.21	मकर 19.59	पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत भद्रा 10.43 से 21.25
पूर्णिमा	08.07	शनि	उत्तरा षाढा	अं चित्रा	24.07.21	मकर	श्री गुरुपूर्णिमा, व्यासपीठ पूजा, श्री दक्षिणामूर्ति जयन्ती, आनन्दोत्सव-श्रीपीठ, श्रीजी दरबार, श्री गुरुपादुकार्चन, परिक्रमा गोवर्धन, चातुर्मास्य प्रारंभ, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.39 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	11.07.21	05.36	19.13
अष्टमी	17.07.21	05.39	19.12
पूर्णिमा	24.07.21	05.42	19.09

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रर्शार्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

श्रावण (नभश्री) कृष्ण पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	05.50	रवि	श्रवण	अं चित्रा	25.07.21	कुम्भ 22.51	अशून्य व्रत प्रारम्भ, कर्क में बुध 11.42, पंचक प्रारम्भ 22.51
द्वितीया	28.03	रवि	-	-	-	-	द्वितीय क्षय
तृतीया	26.54	सोम	धनिष्ठा	औं ज्वालामालिनी	26.07.21	कुम्भ	श्रावण सोमवार व्रत, कांवड़धारण मुहूर्त, भद्रा 15.30 से 26.54
चतुर्थी	26.28	मंगल	शतभिषा	ओं सर्वमंगला	27.07.21	मीन 28.36	चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.50
पंचमी	26.48	बुध	पूर्वा भाद्रपदी	ऐं विजया	28.07.21	मीन	नागपंचमी, कांवड़धारण मुहूर्त
षष्ठी	27.54	गुरु	उत्तरा भाद्रपदी	एं नीलपताका	29.07.21	मीन	भद्रा 27.54 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.01 से
सप्तमी	29.40	शुक्र	रेवती	लृं नित्या	30.07.21	मेष 14.01	पंचक समाप्त 14.01, कांवड़धारण मुहूर्त, सर्वार्थ सिद्धि योग
अष्टमी	अहोरात्र	शनि	अश्विनी	लृं कुलसुन्दरी	31.07.21	मेष 26.22	कालाष्टमी व्रत, कांवड़धारण मुहूर्त देवी पर्व
अष्टमी	07.56	रवि	भरणी	ॠं त्वरिता	01.08.21	वृष 26.22	
नवमी	10.27	सोम	कृतिका	ऋं शिवदूती	02.08.21	वृष	श्रावण सोमवार व्रत, भद्रा 23.43 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 22.42
दशमी	12.59	मंगल	रोहिणी	ऊं महावज्रेश्वरी	03.08.21	वृष	रोहिणी व्रत
एकादशी	15.17	बुध	मृगशिरा	उं वह्निवासिनी	04.08.21	मिथुन 18.58	कामिका एकादशी व्रत, कांवड़धारण मुहूर्त, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.24
द्वादशी	17.09	गुरु	आर्द्रा	ईं भेरुण्डा	05.08.21	मिथुन	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	18.28	शुक्र	आर्द्रा	इं नित्यक्लिन्ना	06.08.21	कर्क 25.50	मास शिवरात्रिव्रत, रुद्राभिषेक, भद्रा 18.28 से, सर्वार्थसिद्धि योग 06.36 से
चतुर्दशी	19.11	शनि	पुनर्वसु	आं भगमालिनी	07.08.21	कर्क	भद्रा 06.50 तक
अमावस्या	19.19	रवि	पुष्य	अं कामेश्वरी	08.08.21	कर्क	देव-पितृकार्ये अमावस्या, हरियाली अमावस्या, सिंह में बुध, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.18 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	25.07.21	05.04	19.08
अष्टमी	31.07.21	05.46	19.05
अमा.	08.08.21	05.50	19.00

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

श्रावण (नभश्री) शुक्ल पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	18.56	सोम	अश्लेषा	अं कामेश्वरी	09.08.21	सिंह 09.49	श्रावण सोमवार व्रत
द्वितीया	18.05	मंगल	मघा	आं भगमालिनी	10.08.21	सिंह	चन्द्रदर्शनं, स्वामी करपात्री जी जन्मदिवस
तृतीया	16.53	बुध	पूर्वा फा0	इं नित्यक्लिन्ना	11.08.21	कन्या	मधुश्रवा तीज, हरियाली तीज, झूला तीज, स्वर्ण गौरी व्रत, भद्रा 28.09 से
चतुर्थी	15.24	गुरु	उत्तरा फा0	ईं भेरुण्डा	12.08.21	कन्या	विनायक दूर्वा चतुर्थी व्रत, भद्रा 15.24 तक
पंचमी	13.42	शुक्र	हस्त	उं वह्निवासिनी	13.08.21	तुला 19.26	नागपंचमी देशाचारीय, श्री कल्कि जयन्ती
षष्ठी	11.50	शनि	चित्रा/ स्वाति	ऊं महावज्रेश्वरी	14.08.21	तुला	वर्णषष्ठी, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.55 से
सप्तमी	09.51	रवि	विशाखा	ऋं शिवदूती	15.08.21	वृश्चिक 22.45	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, भद्रा 09.51 से 20.48, शील सप्तमी, शीतला सप्तमी, भारतीय स्वतंत्रता दिवस 75वां
अष्टमी	07.45	सोम	अनुराधा	ॠं त्वरिता+ लृं कुलसुन्दरी	16.08.21	वृश्चिक	श्रावण सोमवार व्रत, सिंह संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 25.17, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.01 तक
नवमी	29.54	-	-	-	-	-	नवमी क्षय
दशमी	27.20	मंगल	ज्येष्ठा	लॄं नित्या	17.08.21	धनु 25.34	
एकादशी	25.05	बुध	मूल	एं नीलपताका	18.08.21	मकर	पवित्रा एकादशी व्रत, भद्रा 14.12 से 25.05
द्वादशी	22.54	गुरु	पूर्वाषाढ़ा	ऐं विजया	19.08.21	मकर 28.22	विष्णुपवित्रार्पण
त्रयोदशी	20.50	शुक्र	उत्तराषाढ़ा	ओं सर्वमंगला	20.08.21	मकर	प्रदोषव्रत, सर्वार्थसिद्धियोग 21.24 से
चतुर्दशी	19.00	शनि	श्रवण	औं ज्वालामालिनी	21.08.21	मकर	पूर्णिमा व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 20.20 तक, भगवान ऋषि श्री हयग्रीव जयन्ती, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर बड़ी हवेली, उत्सवः
पूर्णिमा	17.31	रवि	धनिष्ठा	अं चित्रा	22.08.21	कुम्भ 07.59	पूर्णिमा पुण्यकाल, रक्षाबन्धन, श्री गायत्री जयन्ती, श्रावणी, कोकिलाव्रत पूर्ण, अमरनाथ यात्रा पूर्ण, शरदऋतु प्रारंभ 27.06, श्रावण सोमवार व्रत, भद्रा 06.15 तक, पंचक प्रा0 07.59

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	09.08.21	05.51	18.59
अष्टमी	16.08.21	05.54	18.53
पूर्णिमा	22.08.21	05.57	18.47

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021–22

भाद्रपद (नभस्याश्री) कृष्ण पक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायणे–उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	16.30	सोम	शतभिषा	चित्रा	23.08.21	कुम्भ	भाद्रण्दारम्भः
द्वितीया	16.04	मंगल	पूर्वा भाद्रपदी	औं ज्वालामालिनी	24.08.21	मीन 13.41	अशून्य शयन व्रत पूर्ण, भीमचण्डी, भद्रा 28.11 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 19.46 से
तृतीया	16.18	बुध	उत्तरा भाद्रपदी	ओं सर्वमंगला	25.08.21	मीन	कज्जली तृतीया, बहुला चतुर्थी व्रत, गोरक्षा संकल्प दिवस, चन्द्रोदय रात्रि 20.51 भद्रा 16.18 तक
चतुर्थी	17.13	गुरु	रेवती	ऐं विजया	26.08.21	मेष 22.28	पंचक समाप्त 22.28, कन्या में बुध, सर्वार्थ सिद्धि योग
पंचमी	18.48	शुक्र	अश्विनी	एं नीलपताका	27.08.21	मेष	हलचंदन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 21.52, सर्वार्थ सिद्धि योग 24.46 तक
षष्ठी	20.56	शनि	भरणी	लृं नित्या	28.08.21	मेष	हरिछठ, ललहीछठ, भद्रा 20.26 से
सप्तमी	23.25	रवि	कृतिका	लृं कुलसुन्दरी	29.08.21	वृष 10.20	भद्रा 10.11 तक
अष्टमी	25.59	सोम	कृतिका 06.38 तक रोहिणी	ॠं त्वरिता	30.08.21	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महाआरती निशीथपूजनम्, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर, श्रीधाम, मथुरा, श्री आद्याकाली जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.38 से, रोहिणीव्रत, देवी पर्व
नवमी	28.53	मंगल	रोहिणी	ऋं शिवदूती	31.08.21	मिथुन 23.08	नन्दोत्सव गोकुल–नन्दगांव, श्रीधाम मथुरा
दशमी	अहोरात्र	बुध	मृगशिरा	ऊं महावज्रेश्वरी	01.09.21	मिथुन	भद्रा 17.22 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.33 तक
दशमी	06.21	गुरु	आर्द्रा	ऊं महावज्रेश्वरी	02.09.21	मिथुन	भद्रा 06.21 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 14.56. से
एकादशी	07.44	शुक्र	पुनर्वसु	उं वह्निवासिनी	03.09.21	कर्क 10.15	अजा एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.41 तक
द्वादशी	08.24	शनि	पुष्य	ईं भेरुण्डा	04.09.21	कर्क	गोवत्स पूजा, प्रदोषव्रत
त्रयोदशी	08.21	रवि	आश्लेषा	इं नित्यक्लिन्ना	05.09.21	सिंह 18.06	मास शिवरात्रि व्रत, अघोरा चौदस, चौदस, कन्या में मंगल, भद्रा 08.21 से 19.59, तुला में शुक्र 24.50, शिक्षक दिवस
चतुर्दशी	07.38	सोम	मघा	आं भगमालिनी	06.09.21	सिंह	पितृकार्ये अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या 'ॐ हूं फट् स्वाहा'
अमावस्या	06.21	मंगल	पूर्वा फाल्गुनी	अं कामेश्वरी	07.09.21	कन्या 22.47	देवकार्ये अमावस्या, नक्तव्रत पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	23.08.21	05.58	18.46
अष्टमी	30.08.21	06.01	18.39
अमा.	07.09.21	06.05	18.30

वार	समय	राहुकाल			
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

भाद्रपद (नभस्यश्री) शुक्ल पक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	28.37	मंगल	-	-	-	-	प्रतिपदा क्षय
द्वितीया	26.32	बुध	उत्तरा फा0	अं कामेश्वरी+ आं भगमालिनी	08.09.21	कन्या	चन्द्रदर्शनं, सर्वार्थ सिद्धि योग 15.55 से
तृतीया	24.18	गुरु	हस्त	इं नित्यक्लिन्ना	09.09.21	तुला 25.44	हरितालिका तीज
चतुर्थी	21.57	शुक्र	चित्रा	ईं भेरुण्डा	10.09.21	तुला	श्री गणेश जयन्ती, गणेश गीता पाठ, गणेशोत्सव, श्रीपीठ बड़ी हवेली, मथुरा, चतुर्थी व्रत
पंचमी	19.37	शनि	स्वाति	उं वह्निवासिनी	11.09.21	वृश्चिक 28.12	ऋषिपंचमी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 11.22 तक
षष्ठी	17.20	रवि	विशाखा	ऊं महावज्रेश्वरी	12.09.21	वृश्चिक	श्री बल्देव षष्ठी, सूर्यषष्ठी
सप्तमी	15.10	सोम	अनुराधा	ऋं शिवदूती	13.09.21	वृश्चिक	मुक्ताभरण संतान सप्तमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.22 तक
अष्टमी	13.09	मंगल	ज्येष्ठा	ॠं त्वरिता	14.09.21	धनु 07.04	श्री राधाष्टमी, श्री दधीचि जयन्ती, श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ, मकर में गुरु
नवमी	11.17	बुध	पूर्वाषाढ़ा	लृं कुलसुन्दरी	15.09.21	धनु	श्रीचन्द्र नवमी, अदुःख नवमी
दशमी	09.39	गुरु	उत्तराषाढ़ा	लॄं नित्या	16.09.21	मकर 10.43	श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, कन्या संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 25.14
एकादशी	08.07	शुक्र	श्रवण	एं नीलपताका	17.09.21	मकर	पद्मा एकादशी व्रत, जलझूलनी एकादशी, श्री वामन जयन्ती, श्री देवी भुवनेश्वरी महाविद्या जयन्ती भद्रा 08.07 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.35 तक
द्वादशी	06.54	शनि	धनिष्ठा	ऐं विजया+ ओं सर्वमंगला	18.09.21	कुम्भ 15.27	प्रदोष व्रत, पंचक प्रारंभ 15.27
त्रयोदशी	29.50	शनि	-	-	-	-	त्रयोदशी क्षय
चतुर्दशी	29.28	रवि	शतभिषा	औं ज्वालामालिनी	19.09.21	कुम्भ	अनन्त चतुर्दशी, गणेशोत्सवः
पूर्णिमा	29.24	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	अं चित्रा	20.09.21	मीन 21.53	पूर्णिमा पुण्यकाल, पूर्णिमाव्रत, महालय श्राद्धपक्षारंभ, पूर्णिमा श्राद्ध, अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री श्री 1008 श्री केशवदेव जी गुरुजी महाराज्ञानां पुण्यतिथि

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	08.09.21	06.05	18.29
अष्टमी	14.09.21	06.08	18.22
पूर्णिमा	20.09.21	06.10	18.15

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021–22

आश्विन (इषश्री) कृष्ण पक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायणे–उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	29.51	मंगल	उत्तरा भाद्रपदी	अं चित्रा	21.09.21	मीन	प्रतिपदा श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 29.05 तक
द्वितीया	अहोरात्र	बुध	रेवती	औं ज्वालामालिनी	22.09.21	मीन	द्वितीया श्राद्ध, तुला में बुध 08.11
द्वितीया	06.53	गुरु	रेवती	औं ज्वालामालिनी	23.09.21	मेष 06.43	तृतीया श्राद्ध, भद्रा 19.41 से, पंचक समाप्त 06.43, स0सिद्धि योग
तृतीया	08.29	शुक्र	अश्विनी	ओं सर्वमंगला	24.09.21	मेष	चतुर्थीश्राद्ध, चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 20.23, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.53 तक
चतुर्थी	10.36	शनि	भरणी	ऐं विजया	25.09.21	वृष 18.17	पंचमी श्राद्ध
पंचमी	13.04	रवि	कृतिका	एं नीलपताका	26.09.21	वृष	पंचमी श्राद्ध, रोहिणी व्रत
षष्ठी	15.43	सोम	रोहिणी	लूं नित्या	27.09.21	वृष	षष्ठी श्राद्ध, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री शीलचन्द्रचर्य महाराज्ञानां, बाबा महाराज श्रीश्री वासुदेव जी महाराज्ञानां पुण्यतिथि, भद्रा 15.43 से 28.29, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 17.40 से
सप्तमी	18.16	मंगल	मृगशिरा	लृं कुलसुन्दरी	28.09.21	मिथुन 07.11	सप्तमी श्राद्ध, देवी पर्व
अष्टमी	20.29	बुध	आर्द्रा	ॠं त्वरिता	29.09.21	मिथुन	अष्टमी श्राद्ध, अशोकाष्टमी, जीवित्पुत्रिकाव्रतं
नवमी	22.08	गुरु	पुनर्वसु	ऋं शिवदूती	30.09.21	कर्क 19.00	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 25.32 से
दशमी	23.03	शुक्र	पुष्य	ऊं महावज्रेश्वरी	01.10.21	कर्क	दशमी श्राद्ध, भद्रा 10.36 से 23.03
एकादशी	23.10	शनि	आश्लेषा	उं वह्निवासिनी	02.10.21	सिंह 27.34	इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध, वृश्चिक में शुक्र 30.27 तक
द्वादशी	22.29	रवि	मघा	ईं भेरुण्डा	03.10.21	सिंह	द्वादशी श्राद्ध, सन्यासीनां श्राद्ध
त्रयोदशी	21.05	सोम	पूर्वा फाल्गुनी	इं नित्यक्लिन्ना	04.10.21	सिंह	त्रयोदशी श्राद्ध, भद्रा 23.00 से, प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	19.04	मंगल	उत्तरा फाल्गुनी	आं भगमालिनी	05.10.21	कन्या 08.13	चतुर्दशी श्राद्ध, दुर्मरण श्राद्धं
अमावस्या	16.34	बुध	हस्त	अं कामेश्वरी	06.10.21	कन्या	देवपितृकार्य अमावस्या, श्राद्धपक्ष पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	21.09.21	06.11	18.14
अष्टमी	29.09.21	06.14	18.05
अमा.	06.10.21	06.18	17.57

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

आश्विन (इषश्री) शुक्ल पक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-उत्तरगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	13.46	गुरु	चित्रा	अं कामेश्वरी	07.10.21	तुला 10.15	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ, घटस्थापना पूजनम्, मध्यान्हे कलश स्थापनम, श्रीमाता बोधनोत्सव नवरात्र आरम्भः, श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा, श्री अग्रसेन जयन्ती
द्वितीया	10.48	शुक्र	स्वाति	आं भगमालिनी	08.10.21	तुला	चन्द्रदर्शनं, द्वितीया पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा
तृतीया	07.48	शनि	विशाखा	इं नित्यक्लिन्ना +ईं भेरुण्डा	09.10.21	वृश्चिक 11.19	तृतीया-चतुर्थी पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 18.22 से 28.55 तक, सिन्दूर तृतीया
चतुर्थी	28.55	शनि	-	-	-	-	चतुर्थी क्षय
पंचमी	26.14	रवि	अनुराधा	उं वह्निवासिनी	10.10.21	वृश्चिक	उपांग ललिता व्रत, पंचमी पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा
षष्ठी	23.50	सोम	ज्येष्ठा	ऊं महावज्रेश्वरी	11.10.21	धनु 12.55	षष्ठी पूजनम् श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम श्रीधाम, मथुरा
सप्तमी	21.47	मंगल	मूल	ऋं शिवदूती	12.10.21	धनु	सरस्वती आह्वान, सप्तमी पूजनम्, निशीथ पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 21.47 से
अष्टमी	20.07	बुध	पूर्वाषाढ़ा	ॠं त्वरिता	13.10.21	मकर 16.07	सरस्वती पूजनम्, सरस्वती बलिदान, श्री दुर्गाष्टमी पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 08.57 तक
नवमी	18.52	गुरु	उत्तराषाढ़ा	लृं कुलसुन्दरी	14.10.21	मकर	सरस्वती विसर्जन, नवमी पूजनम्, श्रीपीठ, महप्रसाद, बोधनोत्सवः उत्थापन पूजनम् च, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा
दशमी	18.02	शुक्र	श्रवण	लॄं नित्या	15.10.21	कुम्भ 21.18	श्री विजयादशमी, शमीपूजा, श्री अपराजिता जयन्ती, पंचक 21.18 से, भद्रा 29.50 से
एकादशी	17.37	शनि	धनिष्ठा	एं नीलपताका	16.10.21	कुम्भ	पापांकुशा एकादशी व्रत, भद्रा 17.37 तक, अखण्डभूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री शिवप्रकाशदेवजी महाराज्ञानां पुण्यतिथिः
द्वादशी	17.39	रवि	शतभिषा	ऐं विजया	17.10.21	मीन	तुला संक्रान्ति (विषुव संज्ञक) 13.12
त्रयोदशी	18.07	सोम	पूर्वा भाद्रपदी	ओं सर्वमंगला	18.10.21	मीन	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	19.03	मंगल	उत्तरा भाद्रपदी	औं ज्वालामालिनी	19.10.21	मीन	कोजागरी व्रत, लक्ष्मीचन्द्रोदय पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.11 तक
पूर्णिमा	20.26	बुध	रेवती	अं चित्रा	20.10.21	मेष	शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारंभ, वाल्मिकी ऋषि जयन्ती, पाराशर ऋषि जयन्ती (मतान्तर), लक्ष्मी चन्द्रपूजा, रासपूर्णिमा, जीवब्रह्मैक्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी दरबार बड़ी हवेली, श्रीधाम, मथुरा, ब्रज परिक्रमारम्भ, भद्रा 07.44 तक, पंचक समाप्त 14.01

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	07.10.21	06.18	17.56
अष्टमी	13.10.21	06.21	17.50
पूर्णिमा	20.10.21	06.25	17.43

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रर्शार्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021–22

कार्तिक (ऊर्जश्री) कृष्णपक्ष शरद–हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे–दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	22.16	गुरु	अश्विनी	अं चित्रा	21.10.21	मेष	तुला में मंगल 26.01, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.16 तक
द्वितीया	24.29	शुक्र	भरणी	औं ज्वालामालिनी	22.10.21	वृष 25.39	
तृतीया	27.01	शनि	कृतिका	ओं सर्वमंगला	23.10.21	वृष	हेमन्त ऋतु प्रारंभ, भद्रा 13.45 से 27.01, सर्वाथ–अमृत सिद्धि योग 21.52 से
चतुर्थी	29.43	रवि	रोहिणी	ऐं विजया	24.10.21	वृष	करवा चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 20.11
पंचमी	अहोरात्र	सोम	मृगशिरा	एं नीलपताका	25.10.21	मिथुन 14.35	सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 28.10 तक
पंचमी	08.23	मंगल	आर्द्रा	एं नीलपताका	26.10.21	मिथुन	
षष्ठी	10.50	बुध	आर्द्रा	लृं नित्या	27.10.21	कर्क 27.02	भद्रा 10.50 से 23.50
सप्तमी	12.49	गुरु	पुनर्वसु	लृंकुलसुन्दरी	28.10.21	कर्क	अहोई अष्टमी पूजा, कालाष्टमी, चन्द्रोदय 23.32, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 09.40 से, देवी पर्व
अष्टमी	14.09	शुक्र	पुष्य	ॠं त्वरिता	29.10.21	कर्क	
नवमी	14.23	शनि	आश्लेषा	ऋं शिवदूती	30.10.21	सिंह 12.51	भद्रा 26.35 से धनु में शुक्र 16.10
दशमी	14.27	रवि	मघा	ऊं महावज्रेश्वरी	31.10.21	सिंह	भद्रा 14.27 तक
एकादशी	13.21	सोम	पूर्वा	उं वह्निवासिनी	01.11.21	कन्या 18.35	रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी
द्वादशी	11.30	मंगल	उत्तरा	ईं भेरुण्डा	02.11.21	कन्या	प्रदोष व्रत, धनतेरस, श्री धन्वन्तरि जयन्ती, तुला में बुध 09.52
त्रयोदशी	09.02	बुध	हस्त	इं नित्यक्लिन्ना+ आं भगमालिनी	03.11.21	तुला 20.49	रुप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.57 तक, भद्रा 09.02 से 19.33 तक
चतुर्दशी	30.03	बुध	–	–	–	–	
अमावस्या	26.44	गुरु	चित्रा	अं कामेश्वरी	04.11.21	तुला	श्री महालक्ष्मी पूजनम्, दीपोत्सव, दीपावली, श्री कमला महाविद्या जयन्ती, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर श्रीधाम, मथुरा, देव–पितृकार्ये अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	21.10.21	06.26	17.42
अष्टमी	29.10.21	06.31	17.35
अमा.	04.11.21	06.36	17.30

वार	**समय**	**राहुकाल**	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

कार्तिक (ऊर्जश्री) शुक्लपक्ष हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	23.14	शुक्र	विशाखा	अं कामेश्वरी	05.11.21	वृश्चिक 21.03	अन्नकूट गोवर्धन पूजा, चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.22 से
द्वितीया	19.44	शनि	अनुराधा	आं भगमालिनी	06.11.21	वृश्चिक	भाईदूज, यमद्वितीया, विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा, चन्द्रदर्शन
तृतीया	16.21	रवि	ज्येष्ठा	इं नित्यक्लिन्ना	07.11.21	धनु 21.03	सर्वार्थ सिद्धि योग 21.03 से, भद्रा 26.48 से
चतुर्थी	13.16	सोम	मूल	ईं भेरुण्डा	08.11.21	धनु	भद्रा 13.16 तक
पंचमी	10.35	मंगल	पूर्वाषाढ़ा	उं वह्निवासिनी	09.11.21	मकर 22.38	सौभाग्य-ज्ञान-पांडव पंचमी
षष्ठी	08.25	बुध	उत्तराषाढ़ा	ऊं महावज्रेश्वरी	10.11.21	मकर	सूर्यषष्ठी डालाछठ, सहस्रार्जुन जयन्ती
सप्तमी	06.49	गुरु	श्रवण	ॠं शिवदूती + ॠं त्वरिता	11.11.21	कुम्भ 26.55	गोपाष्टमी, भद्रा 06.49 से 18.20 तक, पंचक प्रारंभ 26.55
अष्टमी	29.51	गुरु	-	-	-	-	अष्टमी क्षय
नवमी	29.31	शुक्र	धनिष्ठा	लृं कुलसुन्दरी	12.11.21	कुम्भ	अक्षय-आंवला-कूष्मांड नवमी, सतयुगादि तिथि
दशमी	29.49	शनि	शतभिषा	लॄं नित्या	13.11.21	कुम्भ	कंसवध मेला, मथुरा, वासुदेव दशमी
एकादशी	30.39	रवि	पूर्वा भाद्रपदी	एं नीलपताका	14.11.21	मीन 10.14	एकादशी तिथि, देवप्रबोधिनी एकादशी, श्री तुलसी विवाह, भीष्मपंचक व्रतारम्भ, देव दीपावली उत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.30 से
द्वादशी	अहोरात्र	सोम	उत्तरा भा0	ऐं विजया	15.11.21	मीन	देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, (द्वादशी व्रत) कवि कालिदास जयन्ती
द्वादशी	08.01	मंगल	रेवती	ऐं विजया	16.11.21	मेष 20.13	प्रदोष व्रत, वृश्चिक संक्रान्ति (विष्णुपदीसंज्ञक), पंचक समाप्त 20.13 सर्वाथ अमृतसिद्धि योग 20.13 से
त्रयोदशी	09.50	बुध	अश्विनी	ओं सर्वमंगला	17.11.21	मेष	वैकुण्ठ चतुर्दशी
चतुर्दशी	12.00	गुरु	भरणी	औं ज्वालामालिनी	18.11.21	मेष	पूर्णिमाव्रत, भद्रा 12.00 से 25.13
पूर्णिमा	14.26	शुक्र	कृतिका	अं चित्रा	19.11.21	वृष 08.13	पूर्णिमा पुण्यकाल, देवदीपावली, कार्तिक स्नान पूर्ण, श्री गुरूनानक जयन्ती, श्री निम्बार्क जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	05.11.21	06.36	17.30
अष्टमी	11.11.21	06.40	17.27
पूर्णिमा	19.11.21	06.47	17.23

वार	**समय**	**राहुकाल**			
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

मार्गशीर्ष (सहश्री) कृष्णपक्ष हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	17.04	शनि	रोहिणी	अं चित्रा	20.11.21	वृष	वृश्चिक में बुध 28.50 कुम्भ में गुरु 23.12, रोहिणी व्रत सवार्थ-अमृत सिद्धि योग
द्वितीया	19.47	रवि	रोहिणी	औं ज्वालामालिनी	21.11.21	मिथुन 21.08	
तृतीया	22.27	सोम	मृगशिरा	ओं सर्वमंगला	22.11.21	मिथुन	सर्वाथ-अमृत सिद्धि योग 10.42 तक
चतुर्थी	24.55	मंगल	आर्द्रा	ऐं विजया	23.11.21	मिथुन	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20.29
पंचमी	27.03	बुध	पुनर्वसु	एं नीलपताका	24.11.21	कर्क 09.47	श्री मायानन्द चैतन्य जयन्ती
षष्ठी	28.42	गुरु	पुष्य	लॄं नित्या	25.11.21	कर्क	भद्रा 28.42 से सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 18.48 तक
सप्तमी	29.42	शुक्र	आश्लेषा	लृं कुलसुन्दरी	26.11.21	सिंह 20.35	भद्रा 17.12 तक
अष्टमी	30.00	शनि	मघा	ॠं त्वरिता	27.11.21	सिंह	श्री कालभैरवाष्टमी, भैरव समुत्पत्ति जयन्ती उत्सव, श्रीपीठ, श्रीजीमंदिर, श्रीधाम मथुरा, देवी पर्व
नवमी	29.30	रवि	पूर्वा फा0	ऋं शिवदूती	28.11.21	कन्या 27.59	सर्वार्थ सिद्धि योग 22.04 से
दशमी	28.13	सोम	उत्तरा फा0	ऊं महावज्रेश्वरी	29.11.21	कन्या	भद्रा 16.52 से 28.13 तक
एकादशी	26.13	मंगल	हस्त	उं वह्निवासिनी	30.11.21	कन्या	उत्पत्ति एकादशी व्रत
द्वादशी	23.35	बुध	चित्रा	ईं भेरुण्डा	01.12.21	तुला 07.39	
त्रयोदशी	20.26	गुरु	स्वाति	इं नित्यक्लिन्ना	02.12.21	तुला	प्रदोष व्रत, भद्रा 20.26 से 30.41 तक
चतुर्दशी	16.55	शुक्र	विशाखा	आं भगमालिनी	03.12.21	वृश्चिक 08.24	मास शिवरात्रि व्रत, श्री बाला जयन्त्योत्सवः, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.42 से
अमावस्या	13.12	शनि	अनुराधा	अं कामेश्वरी	04.12.21	वृश्चिक	देवपितृकार्ये अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	20.11.21	06.47	17.22
अष्टमी	27.11.21	06.53	17.21
अमा.	04.12.21	06.58	17.21

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

मार्गशीर्ष (सहश्री) शुक्लपक्ष हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	09.27	रवि	ज्येष्ठा	अं कामेश्वरी+ आं भगमालिनी	05.12.21	धनु 07.46	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.46 से 28.53
द्वितीया	29.50	रवि	-	-	-	-	द्वितीया क्षय
तृतीया	26.31	सोम	पूर्वाषाढ़ा	इं नित्यक्लिन्ना	06.12.21	धनु	
चतुर्थी	23.40	मंगल	उत्तराषाढ़ा	ईं भेरुण्डा	07.12.21	मकर 07.46	वैनायकी चतुर्थी व्रत
पंचमी	21.25	बुध	श्रवण	उं वह्निवासिनी	08.12.21	मकर	श्री रामजानकी विवाहोत्सव श्रीपीठ श्रीजी मंदिर बड़ी हवेली, श्रीधाम मथुरा, देवीपर्व, विहार पंचमी, श्री बांकेबिहारी प्राकट्योत्सव, मकर में शुक्र 14.05
षष्ठी	19.54	गुरु	धनिष्ठा	ऊं महावज्रेश्वरी	09.12.21	कुम्भ 10.14	चम्पाषष्ठी, स्कन्दगुह षष्ठी, धनु में बुध 30.07
सप्तमी	19.09	शुक्र	शतभिषा	ऋं शिवदूती	10.12.21	कुम्भ	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयन्ती, भद्रा 17.09 से
अष्टमी	19.12	शनि	पूर्वा भाद्रपदी	ॠं त्वरिता	11.12.21	मीन 16.20	भद्रा 07.11 तक
नवमी	20.02	रवि	उत्तरा भाद्रपदी	लृ कुलसुन्दरी	12.12.21	मीन	नन्दिनी नवमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 23.59 तक
दशमी	21.32	सोम	रेवती	लॄं नित्या	13.12.21	मेष 26.04	दशादित्य व्रत, पंचक समाप्त 26.04
एकादशी	23.35	मंगल	अश्विनी	एं नीलपताका	14.12.21	मेष	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता जयन्ती, भद्रा 10.34 से 23.55 तक, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 28.39 तक
द्वादशी	26.01	बुध	भरणी	ऐं विजया	15.12.21	मेष	व्यंजन द्वादशी, अखण्डा द्वादशी, धनु संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 27.44
त्रयोदशी	28.40	गुरु	भरणी	ओं सर्वमंगला	16.12.21	वृष 14.20	प्रदोष व्रत
चतुर्दशी	अहोरात्र	शुक्र	कृतिका	औं ज्वालामालिनी	17.12.21	वृष	पिशाचमोचन श्राद्ध, रोहिणी व्रत
चतुर्दशी	07.24	शनि	रोहिणी	औं ज्वालामालिनी	18.12.21	मिथुन 27.19	पूर्णिमा व्रत
पूर्णिमा	10.05	रवि	मृगशिरा	अं चित्रा	19.12.21	मिथुन	पूर्णिमा पुण्यकाल, श्री त्रिपुरभैरवी महाविद्या जयन्ती, श्रीपाद दत्तात्रेय जयन्ती, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या जयन्त्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, आदि गुरुगादी श्रीपीठाधीश्वर अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां जयन्त्योत्सव

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	05.12.21	06.59	17.21
अष्टमी	11.12.21	07.03	17.22
पूर्णिमा	19.12.21	07.08	17.24

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

पौष (सहस्यश्री) कृष्णपक्ष हेमन्त-शिशिर ऋतु सूर्य दक्षिणायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	12.36	सोम	आर्द्रा	अं चित्रा	20.12.21	मिथुन	
द्वितीया	14.53	मंगल	पुनर्वसु	औं ज्वालामालिनी	21.12.21	कर्क 15.44	भद्रा 27.53 से, शिशिर ऋतु प्रारंभ
तृतीया	16.52	बुध	पुष्य	ओं सर्वमंगला	22.12.21	कर्क	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20.14, भद्रा 16.52 तक
चतुर्थी	18.27	गुरु	आश्लेषा	ऐं विजया	23.12.21	सिंह 26.40	
पंचमी	19.34	शुक्र	मघा	एं नीलपताका	24.12.21	सिंह 26.40	
षष्ठी	20.09	शनि	पूर्वा फाल्गुनी	लॄं नित्या	25.12.21	सिंह 11.09	भद्रा 20.09 से, महामना पं0 मदनमोहन मालवीय जयन्ती
सप्तमी	20.08	रवि	उत्तरा फाल्गुनी	लृं कुलसुन्दरी	26.12.21	कन्या 11.09	भद्रा 08.08 तक, सर्वार्थ-अमृत-सिद्धि योग 29.24 से
अष्टमी	19.28	सोम	हस्त	ॠं त्वरिता	27.12.21	कन्या	कालाष्टमी व्रत, देवी पर्व
नवमी	18.09	मंगल	चित्रा	ऋं शिवदूती	28.12.21	तुला 16.38	भद्रा 29.11 से
दशमी	16.12	बुध	स्वाति	ऊं महावज्रेश्वरी	29.12.21	तुला	भद्रा 16.12 तक, मकर में बुध 11.33
एकादशी	13.40	गुरु	विशाखा	उं वह्निवासिनी	30.12.21	वृश्चिक 19.04	सफला एकादशी व्रत, धनु में शुक्र 07.55, कल्पवास प्रारंभ
द्वादशी	10.39	शुक्र	अनुराधा	ईं भेरुण्डा	31.12.21	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 22.03 तक
त्रयोदशी	07.09	शनि	ज्येष्ठा	इं नित्यक्लिन्ना+ आं भगमालिनी	01.01.22	धनु 19.16	भद्रा 07.19 से 17.31 तक
चतुर्दशी	27.42	शनि	-	-	-	-	चतुर्दशी क्षय
अमावस्या	24.03	रवि	मूल	अं कामेश्वरी	02.01.22	धनु	देव-पितृकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.22 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	20.12.21	07.09	17.25
अष्टमी	26.12.21	07.12	17.29
अमा.	02.01.22	07.14	17.33

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

पौष(सहस्यश्री) शुक्लपक्ष शिशिर ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	20.21	सोम	पर्वाषाढ़ा	अं कामेश्वरी	03.01.22	मकर 18.53	गुप्तनवरात्र विधान आरम्भ, शाकम्भरी नवरात्र
द्वितीया	17.18	मंगल	उत्तराषाढ़ा	आं भगमालिनी	04.01.22	मकर	चन्द्रदर्शन
तृतीया	14.34	बुध	श्रवण	इं नित्यक्लिन्ना	05.01.22	कुम्भ 19.57	पंचक प्रारंभ 19.57, भद्रा 25.32 से
चतुर्थी	12.29	गुरु	शतभिषा	ईं भेरुण्डा	06.01.22	कुम्भ	भद्रा 12.29 तक, शुक्रास्त 07.30
पंचमी	11.10	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	उं वह्निवासिनी	07.01.22	मीन 24.19	छप्पन भोग गरुड़गोविन्द
षष्ठी	10.42	शनि	उत्तरा भाद्रपदी	ऊं महावज्रेश्वरी	08.01.22	मीन	
सप्तमी	11.08	रवि	रेवती	ऋं शिवदूती	09.01.22	मीन	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती, भद्रा 11.08 से 23.46 तक
अष्टमी	12.24	सोम	रेवती	ॠं त्वरिता	10.01.22	मेष 08.48	पंचक समाप्त 08.48
नवमी	14.21	मंगल	अश्विनी	लृं कुलसुन्दरी	11.01.22	मेष	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 11.09 तक
दशमी	16.49	बुध	भरणी	लॄं नित्या	12.01.22	वृष 20.46	भद्रा 30.11 से, शुक्रोदय 25.14
एकादशी	19.32	गुरु	कृतिका	एं नीलपताका	13.01.22	वृष	पुत्रदा एकादशी व्रत, लोहिड़ी पर्व
द्वादशी	22.19	शुक्र	रोहिणी	ऐं विजया	14.01.22	वृष	मकर संक्रान्ति (सौम्यायनसंज्ञक) 14.30, पुण्यकाल 07.15 से, महाद्वादशी, रोहिणी व्रत
त्रयोदशी	24.57	शनि	मृगशिरा	ओं सर्वमंगला	15.01.22	मिथुन 09.49	प्रदोषव्रत
चतुर्दशी	27.18	रवि	आर्द्रा	औं ज्वालामालिनी	16.01.22	मिथुन	भद्रा 27.18 से, धनु में मंगल
पूर्णिमा	29.17	सोम	पुनर्वसु	अं चित्रा	17.01.22	कर्क	पूर्णिमा व्रत, श्री शाकम्भरी जयन्ती, माघ स्नान प्रारम्भ, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.36 से, भद्रा 16.18 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	03.01.22	07.14	17.33
अष्टमी	10.01.22	07.15	17.39
पूर्णिमा	17.01.22	07.14	17.44

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

माघ (तपश्री) कृष्णपक्ष शिशिर ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	30.53	मंगल	पुष्य	अं चित्रा	18.01.22	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग 30.41 से
द्वितीया	अहोरात्र	बुध	आश्लेषा	औं ज्वालामालिनी	19.01.22	कर्क	शनि अस्त 07.20
द्वितीया	08.04	गुरु	आश्लेषा	औं ज्वालामालिनी	20.01.22	सिंह 08.23	भद्रा 20.27 से
तृतीया	08.51	शुक्र	मघा	ओं सर्वमंगला	21.01.22	सिंह	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21.01, भद्रा 08.51 तक
चतुर्थी	09.14	शनि	पूर्वा फाल्गुनी	ऐं विजया	22.01.22	कन्या 16.45	अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज्ञानां पुण्यतिथि:
पंचमी	09.12	रवि	उत्तरा फाल्गुनी	एं नीलपताका	23.01.22	कन्या	सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 11.08 से, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज्ञानां पुण्यतिथि:
षष्ठी	08.43	सोम	हस्त	लृं नित्या	24.01.22	तुला 23.04	भद्रा 08.43 से 20.16 तक
सप्तमी	07.48	मंगल	चित्रा	लृं कुलसुन्दरी + ॠं त्वरिता	25.01.22	तुला	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, कालाष्टमी, देवी पर्व
अष्टमी	30.25	मंगल	-	-	-	-	अष्टमी क्षय
नवमी	28.33	बुध	स्वाती	ऋं शिवदूती	26.01.22	वृश्चिक 27.09	भारतीय गणतंत्र दिवस 73वाँ
दशमी	26.18	गुरु	विशाखा	ऊं महावज्रेश्वरी	27.01.22	वृश्चिक	भद्रा 15.25 से 26.18 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.50 से
एकादशी	23.55	शुक्र	ज्येष्ठा	उं वह्निवासिनी	28.01.22	धनु 29.07	षट्तिला एकादशी व्रत
द्वादशी	20.37	शनि	मूल	ईं भेरुण्डा	29.01.22	धनु	
त्रयोदशी	17.28	रवि	पूर्वाषाढ़ा	इं नित्यक्लिन्ना	30.01.22	मकर 29.45	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि
चतुर्दशी	14.18	सोम	उत्तराषाढ़ा	आं भगमालिनी	31.01.22	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 21.56 से
अमावस्या	11.15	मंगल	श्रवण	अं कामेश्वरी	01.02.22	कुम्भ 30.48	देवपितृकार्ये अमावस्या, माघी मौनी अमावस्या, प्रयागराज स्नान मेला, पंचक प्रारंभ 30.48

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	18.01.21	07.14	17.45
अष्टमी	25.01.21	07.12	17.51
अमा.	01.02.22	07.09	17.56

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

माघ (तपश्री) शुक्लपक्ष शिशिर ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	08.31	बुध	धनिष्ठा	अं कामेश्वरी+ आं भगमालिनी	02.02.22	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, ललितोत्सवारम्भः
द्वितीया	30.15	बुध	-	-	-	-	द्वितीया क्षय
तृतीया	28.38	गुरु	शतभिषा	इं नित्यक्लिन्ना	03.02.22	कुम्भ	गौरी तृतीया
चतुर्थी	27.47	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी	ईं भेरुण्डा	04.02.22	मीन 10.06	वरद-विनायक तिल चतुर्थी, भद्रा 16.12 से 27.47 तक
पंचमी	27.47	शनि	उत्तरा भाद्रपदी	उं वह्निवासिनी	05.02.22	मीन	वसंत पंचमी, श्री सरस्वती जयन्ती, रति-कामोत्सव
षष्ठी	28.37	रवि	रेवती	ऊं महावज्रेश्वरी	06.02.22	मेष 17.09	मन्दार षष्ठी, पंचक समाप्त 17.09 सर्वार्थ सिद्धि योग 17.09 से
सप्तमी	30.15	सोम	अश्विनी	ऋं शिवदूती	07.02.22	मेष	अचला सप्तमी, रथ-भानु सप्तमी, भद्रा 20.14 से
अष्टमी	अहोरात्र	मंगल	भरणी	ॠं त्वरिता	08.02.22	वृष 28.10	भीष्माष्टमी, भद्रा 19.23 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 21.26 से
अष्टमी	08.30	बुध	कृतिका	ॠं त्वरिता	09.02.22	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग
नवमी	11.08	गुरु	रोहिणी	लृं कुलसुन्दरी	10.02.22	वृष	सोहिणी व्रत
दशमी	13.52	शुक्र	मृगशिरा	लॄं नित्या	11.02.22	मिथुन 17.04	ठा0 दामोदर प्राकट्योत्सव, वृन्दावन, भद्रा 27.10 से
एकादशी	16.27	शनि	आर्द्रा	एं नीलपताका	12.02.22	मिथुन	जया एकादशी व्रत, भद्रा 16.27 तक कुम्भ संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 27.28
द्वादशी	18.41	रवि	आर्द्रा	ऐं विजया	13.02.22	कर्क 29.16	संक्रान्ति पुण्यकाल, भीष्मद्वादशी
त्रयोदशी	20.28	सोम	पुनर्वसु	ओं सर्वमंगला	14.02.22	कर्क	प्रदोषव्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.47 से
चतुर्दशी	21.42	मंगल	पुष्य	औं ज्वालामालिनी	15.02.22	कर्क	भद्रा 21.42 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.47 से
पूर्णिमा	22.26	बुध	अश्लेषा	अं चित्रा	16.02.22	सिंह	माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्री ललिता महाविद्या जयन्ती, श्रीपीठ श्रीजी दरबार, अभिषेक विशेषार्चन, माघ स्नान पूर्ण, भद्रा 10.04 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	02.02.22	07.09	17.57
अष्टमी	08.02.22	07.06	18.02
पूर्णिमा	16.02.22	06.59	18.08

वार	समय	राहुकाल
बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०
गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०
शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०
शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रर्शार्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

फाल्गुन (तपस्यश्री) कृष्णपक्ष शिशिर-वसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	22.40	गुरु	मघा	अं चित्रा	17.02.22	सिंह	इष्टि
द्वितीया	22.29	शुक्र	पूर्वा फाल्गुनी	औं ज्वालामालिनी	18.02.22	कन्या 22.44	वसन्त ऋतु प्रारंभ
तृतीया	21.56	शनि	उत्तरा फाल्गुनी	ओं सर्वमंगला	19.02.22	कन्या	भद्रा 10.12 से 21.56 तक
चतुर्थी	21.05	रवि	हस्त	ऐं विजया	20.02.22	तुला 28.29	चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय 21.50, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 08.48 से
पंचमी	19.57	सोम	चित्रा	एं नीलपताका	21.02.22	तुला	माता यशोदा जयन्ती
षष्ठी	18.34	मंगल	स्वाति	लॄं नित्या	22.02.22	तुला	महाकाल पूजा, उज्जैन भद्रा 18.34 से 29.45 तक
सप्तमी	16.56	बुध	विशाखा	लृं कुलसुन्दरी	23.02.22	वृश्चिक 08.54	कालाष्टमी, गुरु अस्त 23.40, सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि योग 14.40 से, देवी पर्व
अष्टमी	15.03	गुरु	अनुराधा	ॠं त्वरिता	24.02.22	वृश्चिक	श्री सीताष्टमी पर्व, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.30 तक
नवमी	12.57	शुक्र	ज्येष्ठा	ऋं शिवदूती	25.02.22	धनु 12.06	समर्थ रामदास नवमी, भद्रा 23.48 से
दशमी	10.39	शनि	मूल	ऊं महावज्रेश्वरी	26.02.22	धनु	भद्रा 10.39 तक, मकर में मंगल 15.50
एकादशी	08.12	रवि	पूर्वाषाढ़ा	उं वह्निवासिनी + ईं भेरुण्डा	27.02.22	मकर 14.21	विजया एकादशी व्रत, मकर में शुक्र 10.16, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.01 से 29.18 तक
द्वादशी	29.42	रवि	-	-	-	-	द्वादशी क्षय
त्रयोदशी	27.15	सोम	उत्तराषाढ़ा	इं नित्यक्लिन्ना	28.02.22	मकर	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.01 से 19.18 तक, भद्रा 27.15 से
चतुर्दशी	25.00	मंगल	धनिष्ठा	आं भगमालिनी	01.03.22	कुम्भ 16.33	श्री महाशिवरात्रि व्रत, भद्रा 14.07 तक, पंचक प्रारंभ 16.33 से
अमावस्या	23.04	बुध	शतभिषा	अं कामेश्वरी	02.03.22	कुम्भ	देवपितृकार्ये अमावस्या, शिव खप्पर पूजा

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	17.02.21	06.58	18.07
अष्टमी	24.02.21	06.52	18.13
अमा.	02.03.22	06.47	18.17

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
रवि	सायं	४।३० से ६।०	बुध	दिवा	१२।० से १।३०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
			शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

फाल्गुन (तपस्यश्री) शुक्लपक्ष वसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	20.36	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी	अं कामेश्वरी	03.03.22	मीन 20.05	इष्टि
द्वितीया	20.45	शुक्र	उत्तरा भाद्रपदी	आं भगमालिनी	04.03.22	मीन	चन्द्रदर्शन, फुलेरा दौज, श्री रामकृष्णपरमहंस जयन्ती, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 25.50 से
तृतीया	20.36	शनि	रेवती	इं नित्यक्लिन्ना	05.03.22	मेष 26.28	पंचक समाप्त 26.28
चतुर्थी	21.11	रवि	अश्विनी	ईं भेरुण्डा	06.03.22	मेष	कुम्भ में बुध 11.20, अविघ्नकर व्रत, सवार्थ सिद्धि योग 27.50 तक, भद्रा 08.42 से 21.11 तक
पंचमी	22.23	सोम	भरणी	उं वह्निवासिनी	07.03.22	मेष	
षष्ठी	24.31	मंगल	कृतिका	ऊं महावज्रेश्वरी	08.03.22	वृष 12.32	सर्वार्थ सिद्धि योग
सप्तमी	26.56	बुध	कृतिका	ऋं शिवदूती	09.03.22	वृष	भद्रा 26.45 से, सर्वार्थ सिद्धि योग, रोहिणी व्रत
अष्टमी	29.54	गुरु	रोहिणी	ॠं त्वरिता	10.03.22	मिथुन 25.02	होलिकाष्टक प्रारंभ, भद्रा 16.14 तक
नवमी	अहोरात्र	शुक्र	मृगशिरा	लृं कुलसुन्दरी	11.03.22	मिथुन	लठ्ठमार होली बरसाना, श्रीधाम मथुरा
नवमी	08.07	शनि	आर्द्रा	लृं कुलसुन्दरी	12.03.22	मिथुन	
दशमी	10.21	रवि	पुनर्वसु	लॄं नित्या	13.03.22	कर्क 13.27	लठ्ठमार होली नन्दगांव, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 23.13 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 20.05 से
एकादशी	12.05	सोम	पुष्य	एं नीलपताका	14.03.22	कर्क	आमलकी एकादशी व्रत, रंगभरनी एकादशी, लठ्ठमार होली, जन्मभूमि, श्रीधाम मथुरा, मीन संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 24.17
द्वादशी	13.12	मंगल	आश्लेषा	ऐं विजया	15.03.22	सिंह 23.32	प्रदोषा व्रत
त्रयोदशी	13.39	बुध	मघा	ओं सर्वमंगला	16.03.22	सिंह	
चतुर्दशी	13.29	गुरु	पूर्वा	औं ज्वालामालिनी	17.03.22	कन्या	पूर्णिमा व्रत, भद्रा 13.29 से 25.08 तक, होलिकापर्व दीपनं 21.05 से 22.15 तक, दारूण रात्रि
पूर्णिमा	12.47	शुक्र	उत्तरा फाल्गुनी	अं चित्रा	18.03.22	कन्या	धुलैडी पर्व, स्नानदानादिपूर्णिमा, सत्यव्रत, दारूणरात्रि, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	03.03.22	06.46	18.17
अष्टमी	10.03.22	06.38	18.21
पूर्णिमा	18.03.22	06.30	18.25

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।

।। श्री श्रीजी महाराज की जय।। ।। श्री गोपाल जी महाराज की जय।।

।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्त्रशीर्षायै सहस्त्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2078 शाके 1943 ईस्वी सन् 2021-22

चैत्र (मधुश्री) कृष्णपक्ष वसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायणे-दक्षिणगोले

तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	तिथि नित्या (श्रीविद्या)	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
प्रतिपदा	11.37	शनि	हस्त	अं चित्रा	19.03.22	कन्या	
द्वितीया	10.06	रवि	चित्रा	औं ज्वालामालिनी	20.03.22	तुला 11.08	सन्त तुकाराम जयन्ती, भद्रा 21.13 से
तृतीया	08.20	सोम	स्वाती	ओं सर्वमंगला+ ऐं विजया	21.03.22	तुला	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.46, भद्रा 08.20 तक, राष्ट्रीय शाक 1944 प्रारंभ
चतुर्थी	30.24	सोम	-	-	-	-	चतुर्थी क्षय
पंचमी	28.21	मंगल	विशाखा	एं नीलपताका	22.03.22	वृश्चिक 14.32	श्री रंगपंचमी, राष्ट्रीय चैत्रारम्भ
षष्ठी	26.16	बुध	अनुराधा	लृं नित्या	23.03.22	वृश्चिक	एकनाथ षष्ठी, मीराबाई जयन्ती, सर्वार्थ-अमृत सिद्धि योग 18.51 तक, भद्रा 26.16 से
सप्तमी	24.09	गुरु	ज्येष्ठा	लृं कुलसुन्दरी	24.03.22	धनु 17.29	शीतला सप्तमी, मीन में बुध 10.56 भद्रा 13.12 तक
अष्टमी	22.04	शुक्र	मूल	ॠं त्वरिता	25.03.22	धनु	शीतलाष्टमी पर्व बासौड़ा, कालाष्टमी, गुरु उदय 22.44, देवी पर्व
नवमी	20.01	शनि	पूर्वाषाढ़ा	ऋं शिवदूती	26.03.22	मकर 20.27	
दशमी	18.04	रवि	उत्तराषाढ़ा	ऊं महावज्रेश्वरी	27.03.22	मकर	दशमातापूजन, सर्वार्थ सिद्ध योग 13.31 तक, भद्रा 07.02 से 18.04 तक
एकादशी	16.15	सोम	श्रवण	उं वह्निवासिनी	28.03.22	कुम्भ 23.55	पापमोचिनी एकादशी व्रत, पंचक प्रारंभ 23.55, सर्वार्थ सिद्धि योग 12.33 तक
द्वादशी	14.38	मंगल	धनिष्ठा	ईं भेरुण्डा	29.03.22	कुम्भ	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	13.19	बुध	शतभिषा	इं नित्यक्लिन्ना	30.03.22	मीन 28.34	रंगतेरस, भद्रा 13.19 से 24.51 तक, वारूणीपर्व 10.47 तक
चतुर्दशी	12.22	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी	आं भगमालिनी	31.03.22	मीन	मास शिवरात्रि, कुम्भ में शुक्र 08.38
अमावस्या	11.53	शुक्र	उत्तरा भाद्रपदी	अं कामेश्वरी	01.04.22	मीन	देव-पितृकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग 10.39 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	19.03.22	06.29	18.26
अष्टमी	25.03.22	06.22	18.29
अमा.	01.04.22	06.14	18.32

वार	समय	राहुकाल	वार	समय	राहुकाल
			बुध	दिवा	१२।० से १।३०
रवि	सायं	४।३० से ६।०	गुरू	दिवा	१।३० से ३।०
सोम	प्रातः	७।३० से ६।०	शुक्र	प्रातः	१०।३० से १२।०
मंगल	दिवा	३।० से ४।३०	शनि	प्रातः	६।० से १०।३०

आदि गुरुगादी - ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) और यहाँ की महान गुरुपरम्परा

।। ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो नमो गुरुभ्यः।।

श्रुति कहती है '**श्री गुरुः सर्वकारण भूता शक्तिः**'। तदनुसार ही कहा गया है कि - गुरू और गोविन्द दोनों जब सामने हों तो अधिक पूज्य कौन है ? उत्तर है कि गुरू बड़े हैं क्योंकि गोविन्द को बताने वाले वे ही हैं। इसे कुछ और स्पष्ट करते हैं, देखो सामवेदीय तलवारकर शाखा की केनोपनिषत् श्रुति कहती है कि -

तत्र चक्षुः न गच्छति ।

न वाक् गच्छति ।

न उ मनः गच्छति ।

वहां न चक्षु जा सकता है न वाणी न मन, क्योंकि वह तो वो शक्ति है जिसकी सामर्थ्य से चक्षु वाक और मन अपने-अपने कार्य को कर पाते हैं अतः -

न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात ।

ऋषि कहते हैं कि हम न उसे जानते हैं और न ही यह जानते हैं कि उसकी शिक्षा कैसे दी जाय उस तत्व का उपदेश कैसे किया जाय ? क्योंकि वह विदित से अन्य है और अविदित से भी परे है, वह ऐसा है विदित और अविदित दोनों से परे ये भी हमने गुरुओं से परम्परा के द्वारा सुना है जिन्होंने उस पर तत्व की हमारे बोध के लिए व्याख्या की ।

इति सुश्रुम पूर्वेषां ।

पूर्व गुरुओं से सुना, गुरू परम्परा से सुना । अच्छा जी, तो कैसे बतावें ब्रह्म को ? कि बताने की एक ही युक्ति है जो हमें **गुरू परम्परा** से प्राप्त हुई है जो हमें हमारे गुरू महाराज ने बताई है कि बिल्कुल नहीं समझा सकते सो बात नहीं है, तुम जो चाहते हो कि हम इन्द्रियों से देख लें, मन से देख लें, बुद्धि से देख लें ये तो असंभव है ? जिन इन्द्रियों से जिस बुद्धि से जिस मन से तुम उसे देखना चाहते हो वे तो उसी के पेट में, उसी के प्रकाश में, उसकी सामर्थ्य से ही अपने कार्य कर पाते हैं ।

ये वांग्मनसगोचरत्वेन अनिर्वचनीय है ।

है तो प्रत्यक्ष ज्ञान स्वरूप साक्षात् अपरोक्ष किन्तु मन, वाणी आदिक से अनिर्वचनीय, अवर्णनीय है। उसे केवल आगम से ही समझाया जा सकता है, कि महाराज ये आगम क्या है ? देखो, इस चिन्मात्र तत्व के जो अनुभवी महापुरुष हुए हैं उनके वचनों से, उन्हें चाहे पौरूषेय कहो या अपौरूषेय भाई बात यह है कि '**अखण्ड**

सच्चिदानन्दं महावाक्येन लक्ष्यते' कि अखण्ड सच्चिदानन्द जो तत्व है, जो परब्रह्म है, जो पर तत्व है वह महावाक्य से ही लक्षित होता है। और इन महावाक्यों के प्रकाशक जो हैं उपदेश करने वाले जो हैं वे हैं श्री गुरू ! सद्‌गुरुदेव, गुरुनाथ !

तो कहने का आशय यह है कि श्री गुरू वे तत्व हैं जो सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, महाप्रभु दत्त और अमलात्मा शुकदेव आदिक महात्माओं द्वारा उपदेशित ब्रह्मतत्व का पर तत्व का हमारे लिए उपदेश करते हैं– कि '**तत्वमसि श्वेतकेतो**' कि 'तू वही है'। अतः कहा गया कि 'बलिहारि गुरू आपने गोविन्द दियौ बताय'। देखो ये हड्‌डी मांस का साढ़े तीन हाथ का शरीर जिसे चर्म से लपेटा गया है जिसमें हाथ, पैर, वाणी, गुदा, उपस्थ ये कर्मेन्द्रियां, आंख, कान, नाक, जिव्हा, त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियां और मन, बुद्धि, चित्त अहंकार ये चार वृत्तियां – अंत:करण चतुष्टय हैं, अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय ये पांच कोष हैं वह समुच्चय क्या आप हैं क्या आपका आपा है ?अरे नहीं, वह तो अन्त:करण की वृत्ति है अहं जिसे आप स्व मानते हैं आपका स्व आपका मैं तो ब्रह्म है, **सर्वंब्रह्मैव** – ये सब कुछ ब्रह्म है और **तत्वमसि श्वेतकेतो** ये बताने वाले ये समझाने वाले कि श्वेतकेतु तू वही है – **श्री गुरूदेव श्री गुरूमहाराज ब्रह्म विद्या के उपदेशक, ब्रह्म विद्या की अक्षुण्ण गुरू परम्परा और ऐसी ही एक परम्परा है ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) की गुरुपरम्परा। गुं गुरूपादुकाभ्यो नमः ।।**

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्‌गुरुं तं नमामि ।।
सर्वतंत्र स्वतंत्राञ्च श्रीविद्यापीठस्थ देशिकाः ।
श्री श्री शीलचन्द्राचार्यास्तत्पुत्रा वासुदेवस्तपोधनः ।।
तत्पुत्रा केशवाचार्याः सर्वशास्त्र विशारदाः ।
तेषां शिवप्रकाशाख्या ज्येष्ठपुत्रा यशस्विनः ।।
तत्पुत्रा लक्ष्मीपतयाचार्याः ब्रह्मतत्व विशारदाः ।
तेषां सुरेशाचार्यः ज्येष्ठपुत्रा यशस्विनः ।।
साम्प्रतं तत्सुता श्रीकान्ताचार्यः पीठ संस्थिताः ।।

श्रीविद्यापीठ सिद्ध गादी पर स्वतन्त्र लोकवन्दित एवं सार्वदेशिक आचार्यों में अखण्ड भूमण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद् श्री मकरन्द जी महाराज, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्री श्रीपति जी महाराज, श्री मोहन जी, अखण्ड

भूमण्डलाचार्य ब्रह्मपाद श्री शंकरमुनि जी महाराज, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्री चैतन्य शंकर जी महाराज, अखण्ड भूमण्डलाचार्य ब्रह्मपाद श्री श्रीशीलचन्द्र जी महाराज सं0, अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री वासुदेव जी महाराज सं0 १६०२ वि0, ब्रह्मपाद् श्री केशवदेव जी महाराज सं0 १६४० वि0, प्रात:स्मरणीय ब्रह्मपाद् श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज सं0 १६६० वि0, अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद् श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज सं0 १६६० वि0 अनन्त श्री विभूषित श्री सुरेशाचार्य जी महाराज संवत् २०५५ गध्यस्थ हुए हैं और वर्तमान में इस गद्दी पर आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज पीठासीन हैं। (श्री विद्या शोध संस्थान द्वारा किये जा रहे अध्ययन के अनुसार श्री श्री १००८ श्री शंकर मुनि जी महाराज का समय विक्रमाब्द १६६० के लगभग रहा है। इस विषय में श्री विद्या शोध संस्थान द्वारा अध्ययन किया जा रहा है)

प्रात: स्मरणीय श्री श्री शंकरमुनि जी महाराज के अलौकिक वैराग्य से प्रभावित होकर पण्डित राज सम्राट दीक्षित महोदय ने पूजा रत्न ग्रन्थ समर्पित किया और श्री श्री महाराज जी द्वारा महाविद्या देवी मन्दिर का शिखर बन्ध निर्माण कराकर श्रीमान् दीक्षित महोदय को महाविद्या उपासना की सिद्धि उपलब्ध कराई गई।

अखण्डभूमण्डलाचार्य अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री शीलचन्द्र जी महाराज अपने समय के मूर्धन्य विद्वान व सिद्ध गुरु थे । आपने अवन्तिकापुरी में गंगाजी की आराधना कर उनसे 'श्रीविद्या' का वर प्राप्त किया था। कुछ समय बाद जब आप मथुरा पधारे तो आपके ज्येष्ठ भ्राता अनन्त श्री विभूषित श्री चैतन्य शंकर जी महाराज तथा काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री हलधर भट्ट में शास्त्रार्थ चल रहा था। आपने पूज्य भ्राताश्री से आज्ञा प्राप्त कर उसी समय श्रीमान् हलधर भट्ट महोदय को शास्त्रार्थ में पराजित किया। **आपने मथुरा के सूर्यघाट पर 'सूर्यदेव' को प्रत्यक्ष कर उनसे कई वरदान प्राप्त किये।** एक समय ब्रह्मपाद श्री शीलचन्द्र जी महाराज ने ऐसे वार्षिकी नवरात्रोत्सव का आयोजन किया जिसमें शैलपुत्री आदि नवदुर्गाओं ने पीठ पर स्वयं प्रकट होकर पूजा ग्रहण की । **नवरात्र के षष्ठम दिवस महाराज श्री ने भगवती कात्यायनी की पूजा के लिए विश्रामघाट (मथुरा) पहुँचकर 'श्री यमुना' से भगवती कात्यायनी को प्रकट कर उनकी पूजा की यहीं से यमुना षष्ठी महोत्सव का प्रारम्भ भी हुआ जिसकी प्रथम पूजा अद्यावधि श्रीपीठ श्रीजी दरबार से ही की जाती है। यमुना षष्ठी अब केवल मथुरा में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनायी जाती है।** तत्पश्चात् पुन:

कालरात्रि आदि देवियों को महाराज श्री ने पीठ पर ही प्रत्यक्ष किया । ब्रज क्षेत्र में श्री विद्या की परम्परा जहां कहीं भी है आप ही के द्वारा स्थापित है।

आपके कर कमलों से व्रज क्षेत्र में तथा अन्यत्र बहुत से कार्य सम्पन्न हुए । व्रजक्षेत्र के प्राय: सभी महत्वपूर्ण मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित किये गये। मथुरा का सुप्रसिद्ध द्वारिकाधीश मन्दिर, केशवदेव मन्दिर (श्रीकृष्ण जन्मभूमि) एवं वृन्दावन के प्रसिद्ध बिहारीजी एवं रंगजी के मन्दिर महाराजश्री के करकमलों से ही प्रतिष्ठित हुए हैं। इसके अलावा गजापाइसा के पास स्थित दशभुजी गणेश मन्दिर, विश्राम घाट स्थित मुकुट मन्दिर, भूतेश्वर, रंगेश्वर, गोकर्णेश्वर, वीरभद्रेश्वर, गोपेश्वर, शिवताल एवं गणेश टीला आदि मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित कराये गये । संवत् 1951 में महाराज श्री ने अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित महाविद्या देवी मन्दिर का जीर्णोद्धार और सहस्र चण्डी यज्ञ का आयोजन कराया गया जिसका कि शिलालेख यहाँ (महाविद्या मन्दिर) पर लगा हुआ है। महाराज श्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय भी की गई ।

इतना ही नहीं महाराज श्री महान समाज सुधारक थे । आपने समाज में फैली कुरूनीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किये। चतुर्वेद समाज के उत्थान के लिए चतुर्वेदी महासभा एवं श्री माथुर चतुर्वेद परिषद की स्थापना महाराज श्री द्वारा ही की गई । इसके अलावा चतुर्वेदियों में एक सौ पन्द्रह रुपये के विवाह आदि की व्यवस्था आपके ही द्वारा की गई । जो किसी न किसी रूप में अद्यावधि चल रही है। व्याकरण केसरी रंगदत्त जी, गंगदत्त जी (जिन्होंने स्वामी दयानन्द को मथुरा से पलायन पर विवश किया), कविवर नवनीत जी, बूँटी सिद्ध (गायत्री सिद्ध) एवं गणेशीलाल जी संगीत मार्तण्ड तान्त्रिक रत्न वृन्दावन जी आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की । **आपके एक शिष्य श्रीमान् बूँटी सिद्ध ने मथुरा के एक टीले पर माता गायत्री को प्रत्यक्ष किया था जिससे उस टीले का नाम गायत्री टीला और उनका नाम गायत्री सिद्ध ही पड़ गया ।** श्री गोपाल सुन्दरी, पीताम्बरा तथा बाला पद्यतियां आपके द्वारा रचित हैं। चौबिया पाड़े में विराजमान श्री महागणपति दशभुजी गणेश का स्वरूप श्री महाराज श्री का ही श्री विग्रह है। जब आपके शिष्यों ने आपके अन्तिम समय में आपसे प्रार्थना की कि हम सदैव आपकी सेवा करना चाहते हैं आप सदैव अपना आशीर्वाद हम पर बनाकर रखें तो महाराज श्री द्वारा दशभुजी गणेश श्री महागणपति के रूप में सदैव चतुर्वेदीयों पर आशीर्वाद बनाये रखने की प्रार्थना स्वीकार की गयी। महाराज श्री द्वारा कितनी ही बार काशी दिग्विजय की गई और काशी ने उद्भट् विद्वानों को शास्त्रार्थ में नतमस्तक किया गया।

सं 1902 वि0 कार्तिक चतुर्थी के दिन 40 वर्ष की अवस्था में आपके यहां पुत्र का जन्म हुआ। आपने इनका नाम विघ्नहरण रखा, किन्तु प्यार का नाम 'बबुआजी' और बाद में आप वासुदेवजी महाराज के नाम से विख्यात हुए । शिष्यों में आपकी 'बाबा महाराज' के नाम से प्रसिद्धि हुई । तदनन्तर श्रीजी महाराज की अनुकम्पा से आप सर्वशास्त्र निष्णात् हो गये । बाबा महाराज की जिह्वा पर वाग्वादिनी माता सरस्वती स्वयं विराजतीं थी। महाराज श्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय की गई और विद्वता में मथुरा का परचम लहराया।

आपकी शिष्य मण्डली में अर्की मण्डी के महाराज ध्यानसिंह जी थे जिन्हें आपने श्री गोपाल सुन्दरी देवी की दीक्षा तथा पूजा-पद्धति प्रदान की थी । आपके शिष्य वृंदावनजी रतनकुण्ड वालों ने तन्त्र मार्ग में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। आपने वैष्णव कुलकेतु श्री देवकीनन्दन जी महाराज (कामवन वालों) को असाध्य अवस्था में बचाया । तत्पश्चात् देवकीनन्दन महोदय ने आपसे गोपाल सुन्दरी दीक्षा प्राप्त की, जिसके द्वारा समय समय पर श्रीमान देवकीनन्दन जी द्वारा भी अनेक चमत्कार किये गये। आप तंत्र-मंत्र-यंत्र श्रुति, स्मृति, धर्मशास्त्र और ज्योतिष के तत्ववेत्ता विद्वान थे। श्री माथुर चतुर्वेदी परिषद का विस्तार आप ही के सफल नेतृत्व में किया गया। आपने वैष्णव कुलकेतु गोपाल लालजी महाराज को असाध्य अवस्था में बचाया । भरतपुर के धाऊ श्री को 60 वर्ष की अवस्था में आपने अपने मन्त्र बल से पुत्र दर्शन कराये एवं मथुरा निवासी अनेक व्यक्तियों को असाध्य परिस्थितियों से मुक्त किया । आपने तत्कालीन भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्रसिंह को समय-समय पर अनेक अद्भुत चमत्कार दिखलाये और उनसे सम्मान प्राप्त किया। **आप ही के एक शिष्य श्रीमान् धूजी चौबे ने घोर अकाल की आशंका वाले अवर्षण काल में मंत्र बल से इन्द्रदेव को प्रसन्न कर मूसलाधर वर्षा कराई जिससे उनका नाम ही 'मूसलाधार चौबे' पड़ गया ।** एक समय महाराज श्री की इच्छा महाप्रभु श्री चैतन्य देव की जन्मभूमि को देखने की हुई और महाराज श्री ने अपने शिष्यों के साथ मायापुर प्रस्थान किया, वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि महाप्रभु की जन्मभूमि तो गंगा के गर्भ में समा गयी है तब महाराज श्री ने अपने शिष्य को अपने शरीर की सुरक्षा का आदेश देकर योगबल से अपना स्थूल शरीर त्याग कर, सूक्ष्म शरीर से गंगा जी के गर्भ में जाकर महाप्रभु चैतन्यदेव के जन्म स्थान के दर्शन किये और तत्पश्चात् मथुरा आये।

पौष कृष्णा 10 गुरुवार सं0 1940 को आपके पुत्र का जन्म हुआ । आपने उनका नाम केशवदेव जी प्रतिष्ठित किया। प्रात:स्मरणीय श्री केशवदेव जी का लाढ़

का नाम भैयाजी था और जनसाधारण में आप गुरुजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आपका आगम निगम का अध्ययन अपने पूज्य पिताजी द्वारा श्रीजी दरबार की पाठशाला में ही सम्पन्न हुआ। आप 9 वर्ष की अवस्था में सर्वशास्त्र निष्णात् हो गये थे ।

आपके पितृचरण प्रातः स्मरणीय श्री वासुदेव जी महाराज के कैलाशवास के उपरान्त 35 वर्ष की अवस्था में आपको शिष्य वर्ग ने परम्परानुसार गद्दी पर विराजमान किया । इस समय आपके अंग-अंग पर असाधारण सौन्दर्य एवं श्रीमुख पर ब्रह्म तेज की आभा व्याप्त थी। भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्र सिंह, वैष्णव कुलकेतु श्री गोपाल लाल जी महाराज, तान्त्रिक रत्न श्रीमान् बटुकन प्रसाद जी उनके पुत्र श्री विष्णुदत्त जी आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है।

महाराज श्री के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मपाद् शिवप्रकाश देव जी महाराज का जन्म सं0 १९६३ में हुआ था । महाराज श्री ने आपका नाम 'शिवप्रकाश' रखा । घर का नाम 'लालजी' होने के कारण आप जनसाधारण में 'लाल बाबा महाराज' के नाम से विख्यात हुए । आप असाधारण विद्वान थे । आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की थी । आपने ज्योतिष, व्याकरण, तंत्र-मंत्र-यंत्र शास्त्र, श्रीमद् देवी भागवत, श्रीमद् भागवत, कर्मकाण्ड और वेदादि समस्त संस्कृत वांगमय का सांगोपांग अध्ययन किया । श्रीजी महाराज की अनुकम्पा से आप बहुत छोटी अवस्था में ही सर्वशास्त्र निष्णात हो गये । आप तंत्र शास्त्र, मंत्र शास्त्र, यंत्र शास्त्र के सार्वदेशिक विद्वान थे। श्री शिव प्रकाश देव जी महाराज के अनुज श्री करुणा शंकर जी महाराज (कन्ने बाबा) भी अपने समय के उद्भट्ट विद्वान थे । आपकी गणना मथुरा के श्रेष्ठ तांत्रिकों में थी। श्रीमान करुणा शंकर जी अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री शिव प्रकाश देव जी महाराज को दादाजी के नाम से सम्बोधित किया करते थे। आपका यह सम्बोधन इतना प्रेम पूर्ण और प्रबल था कि श्री शिव प्रकाश देव जी लाल बाबा महाराज को समस्त शिष्य सम्प्रदाय आज तक दादा जी महाराज के नाम से ही जानता है। श्री शिवप्रकाश देवजी महाराज ने कलकत्ता के विश्वविख्यात विद्वान एवं कपालिक सम्प्रदाय के आचार्य श्रीमान् चांबर्दिया ओझा को तंत्र-शास्त्र में नतमस्तक कर उनसे एक अद्भुत श्री यंत्र भेंट में प्राप्त किया । इसी प्रकार सन् १९४४-४५ के आस-पास कुरुक्षेत्र में एक सूर्य यज्ञ हुआ था । जिसमें सर्वोपरि तीन आचार्यों में से एक आप थे । अन्य दो पद भी भारत के विशिष्ट विद्वानों को ही दिये गये थे । आप वेदान्त/उपनिषदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। और गम्भीर एवं अल्पभाषी थे । आपके श्री मुख पर ब्रह्मतेज की ऐसी आभा व्याप्त थी कि आप अंधेरे में बैठे हुए

ही स्पष्ट दिखाई देते थे। महाराज श्री के द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ हैं। अत्यन्त अल्पावस्था में ही आश्विन शुक्ल एकादशी सं0 २०१६ को महाराज श्री ब्रह्मलीन हो गये ।

महाराज श्री के ज्येष्ठपुत्र सर्वतन्त्र स्वतन्त्र अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज का जन्म आश्विन कृष्णा प्रतिपदा सं0 १६६० में हुआ था । घर का नाम 'मुन्ना जी' होने के कारण आप जन सामान्य में मुन्नाबाबा महाराज के नाम से विख्यात् हुए। जब आपके पितृचरण श्री शिवप्रकाश देवजी महाराज का कैलाशवास हुआ तब आप बी.डी.ओ. के पद पर कार्यरत थे । परिवार की परम्परानुसार आप उक्त पद से त्यागपत्र देकर गद्दी पर विराजमान हुए । आप तंत्र-शास्त्र, मंत्र-शास्त्र एवं यंत्र-शास्त्र तथा ज्योतिष के सार्वदेशिक विद्वान थे । आप एक वाणीसिद्ध महापुरुष और एकनिष्ठ उपासना एवं तन्त्रज्ञान की तपोमूर्ति थे। अपने पिताश्री के ही समान आप अत्यन्त गम्भीर एवं अल्पभाषी विद्वान थे, वेदान्त ज्ञान आपको उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था। आप तंत्र ज्ञान की करुणा मूर्ति थे अतः आपने अपने तंत्र ज्ञान से असंख्य शिष्यों का कल्याण किया । आपने अपने तन्त्र ज्ञान के बल से समय-समय पर अनेक चमत्कार दिखाये । 'महाराज श्री' तन्त्र का प्रयोग 'विश्व कल्याण के लिये करने के समर्थक थे और महाराज श्री का जीवन उनके इसी दृढ़ विश्वास का ज्वलन्त उदाहरण है। महाराज श्री निष्काम कर्मयोगी थे और एक सच्चे सन्यासी एवं सच्चे योगी थे । महाराज श्री ने गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी वैराग्य का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

आप वेदान्त के गूढ़ ब्रह्मतत्व का वर्णन बड़े ही सरल शब्दों में किया करते थे। महाराज श्री कहा करते थे कि सत्य और ज्ञान पर्यायवाची हैं । जो सत्य से प्रेम करेगा वही ज्ञान से भी प्रेम कर सकता है। आप भक्ति की पुरजोर वकालत करते और कहते कि ज्ञान भक्ति का विरोधी नहीं अपितु भक्ति में जो अज्ञान है उसका निषेधक है।

महाराज श्री, श्री दुर्गा सप्तशती एवं श्रीमद् भगवदगीता के प्रकाण्ड विद्वान थे और आपकी शिव गीता एवं श्रीमद् भगवद् गीता में विशेष श्रद्धा थी । महाराज श्री के दिन का प्रारम्भ श्रीमद्भगवद गीता एवं सौन्दर्य लहरी के श्लोकों को बोलते हुए और आचार्य शंकर के 'भज गोविन्दम् - भज गोविन्दम्' को गुनगुनाते हुए होता था। गीता के विषय में महाराज श्री बहुधा अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि यह शास्त्रों का सार है और गीता का तत्व ज्ञानी दुर्लभ है। आप हिन्दू धर्म के मुख्य दर्शन 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' के प्रबल समर्थक थे । संवत् २०५५ माघ कृष्ण षष्ठी के दिन महाराज श्री ने अन्तिम समाधि लगाकर अपने चित्त को परब्रह्म में स्थिर कर लिया

और अपनी इह लोक लीला समाप्त की । महाराज श्री ने श्री भुवनेश्वरी पंचांग, श्री काली पंचांग आदि ग्रन्थों की रचना की ।

आपके ज्येष्ठ पुत्र अनन्त श्री विभूषित श्री सुरेश बाबा महाराज अत्यन्त अल्पभाषी विद्वान और श्री विद्या के सिद्ध उपासक थे । आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की। आप व्याकरण ज्योतिष एवं वेद-वेदान्त जैसे विषयों के साथ आचार्य एवं शिक्षा-शास्त्री थे और आपको श्रीविद्या पर विशेषाधिकार प्राप्त था। आपको वर्ष सन् १९८६ में ठा0 श्रीजी महाराज ट्रस्ट (रजि0) का संस्थापक अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ । **उपरोक्त ट्रस्ट द्वारा ही 'श्री विद्या शोध संस्थान' का पुनः प्रवर्तन एवं संवर्धन वर्ष सन्** १९८६ **में किया गया** जिसमें वेद-वेदान्त, मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र के अलावा ज्योतिष एवं पौरोहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं शोध के प्रकल्प सन्निहित हैं। संवत् २०७० माघकृष्ण षष्ठी के दिन महाराज श्री ने अपने चित्त को पराम्बा श्री राजराजेश्वरी भगवान श्रीजी महाराज में स्थिर कर इह लोक से प्रस्थान किया। श्रीजी दरबार की परम्परानुसार शिष्यों ने आपके पुत्र श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज को गुरु गादी पर विराजमान किया गया। श्रीकान्त श्रीजी महाराज ने वेदवेदान्त जैसे विषयों के साथ संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्रीमद् देवी भागवत श्रीमद् भागवतादि पुराणों के सुमधुर प्रवक्ता हैं और प्रसिद्ध धर्मोपदेशक हैं। आप ज्योतिषाचार्य हैं और वेदान्त भूषण और साहित्यतीर्थ सम्मान प्राप्त हैं । श्रीकान्त श्रीजी महाराज श्रीजी दरबार की परम्परा के योग्य अधिकारी हैं। आप ठाकुर श्रीजी महाराज ट्रस्ट के संरक्षक तो हैं ही स्वामी श्री हरिदासाराध्य ठाकुर श्री बाँकेबिहारी जी मन्दिर, वृन्दावन की प्रबन्ध कमेटी के सदस्य भी हैं।

नमो गुरूभ्यो गुरू पादुकाभ्यो । नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो । नमोऽस्तु लक्ष्मीपति गुरूपादुकाभ्यो ।।

द्वारा :- श्री विद्या शोध संस्थान
यज्ञशाला सत्संग भवन
श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, बड़ी हवेली
महाराज श्री की ठेक, गताश्रम टीला, मथुरा

सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण विवरण सन् २०२१-२२

१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक विक्रम सम्वत् २०७८ में समस्त भूमण्डल पर दो सूर्यग्रहण तथा दो चन्द्रग्रहण होंगे। भारतीय भूभाग पर दिनांक २६-५-२०२१ वैशाख शुक्ल पूर्णिमा में होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण तथा ता. १९ नवम्बर २०२१ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार में होने वाले चन्द्रग्रहण को केवल भारत के पूर्वी प्रदेशों से ही देखा जा सकेगा। ता. १० जून २०२१ तथा ४ दिसम्बर २०२१ में हो वाले सूर्यग्रहण केवल विदेशों में दिखाई देंगे।

<u>भारत में दृश्य खग्रास चन्द्रग्रहण</u>- ता. २६ मई २०२१ वैशाख शुक्ल पूर्णिमा बुधवार में भा.स्टै.टा. के अनुसार दिन में ३ बजकर १५ मिनट से सायं ६ बजकर २३ मिनट तक खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। भारत के केवल पूर्वोत्तर भूभाग अरुणाचलप्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल के कुछ पूर्वी भाग से इस ग्रहण को सायंकाल केवल १८ मिनट तक की समयावधि में ही देखा जा सकेगा। इस ग्रहण को दक्षिण अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, पेसिफिक सागर, हिन्द महासागर, पश्चिमी ब्राजील, कनाड़ा, श्रीलंका, चीन, मंगोलिया, रूस, आस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका आदि देशों से भी देखा जा सकेगा।

सूतक- चन्द्रग्रहण का सूतक चन्द्रोदय से ९ घंटे पूर्व उन्हीं शहर विशेष, महानगर, देश-प्रदेशों में मान्य होते हैं, जिनके शिरोभाग आकाश में ग्रहण हुआ करते हैं। दिल्ली समेत समस्त उत्तर, पश्चिम, मध्य और दक्षिण भारत में यह ग्रहण तथा इसके सूतक मान्य नहीं होंगे ।

<u>विदेशों में कंकणाकृति सूर्यग्रहण</u>- ता. १० जून २०२१ ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या गुरुवार के दिन भा.स्टै.टा. के अनुसार १३/४३ से १८/४१ बजे के मध्य आस्ट्रिया, बेलारुस, बेल्जियम, कनाड़ा, चीन, क्रेचगणराज्य, डेनमार्क, ऐस्टोनिया, फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीनलैण्ड, हंगरी, आइसलैंड, आयरलैंड, इटली, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, लातविया, लिथूनिया, मालदोवा, मंगोलिया, मोरक्को, नीदरलैंड, नार्वे, पोलेण्ड, पुर्तगाल, रोमानिया, रूस, स्लोवाकिया, स्पेन, स्वीडन, स्वीटजरलैंउद्व तर्कमेनिस्ता, यूक्रेन, इंगलैंड, अमेरिका, उज्बेकिस्तान आदि देशों में खग्रास सूर्यग्रहण होगा। भारत में यह ग्रहण किसी भी स्थान से दिखाई नहीं देगा। नोट-भारत में कहीं भी इस ग्रहण का सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा।

<u>भारत में दृश्य खग्रास चन्द्रग्रहण</u>- ता. १९ नवम्बर २०२१ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार में भा.स्टै.टा. के अनुसार १२/४८ बजे से १६/१७ बजे तक रहेगा। समाप्त होते हुए इस ग्रहण को भारत में अरुणाचल प्रदेश के पूर्वी सीमान्त क्षेत्र तेजू चांगविनती आदि से बहुत थोड़े समय के लिए चन्द्रोदय के समय देखा जा सकेगा। भारत के पूर्वी सीमान्त क्षेत्र के साथ-साथ इस ग्रहण को पश्चिमी अफ्रीका, पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, एशिया, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, इण्डोनेशिया, थाईलैंड, चीन, रूस, अटलांटिक और पेसिफिक सागर से भी देखा जा सकेगा। भारत के अन्य भागों में सूतक (पातक) मानने की आवश्यकता नहीं है।

<u>विदेशों में खग्रास सूर्यग्रहण</u>- ता. ४ दिसम्बर २०२१ मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या शनिवार के दिन भा.स्टै.टा. के अनुसार १०/५९ से १५/०७ बजे के मध्य आस्ट्रेलिया, नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका, द. जार्जिया, मेडागास्कर, मॉरीशिस, वोत्सवाना और तस्मानिया आदि देशों में खग्रास सूर्यग्रहण होगा। भारत में यह ग्रहण किसी भी स्थान से दिखाई नहीं देगा। नोट - भारत में कहीं भी इस ग्रहण का सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा।

।। देवदमन श्रीनाथ जी।। ।। श्री यमुना जी।।

कृमयः किं न जीवन्ति भक्षयन्ति परस्परम् ।
परलोकाविरोधेन यो जीवति स जीवति ।।
(व्यास स्मृति)

भगवान ऋषि जी व्यास कहते हैं कि कीट पतंगादि भी क्या जीवन निर्वाह नहीं करते ? कि जो एक दूसरे को खा लेते हैं । अर्थात् कीट पतंगादिकों का जीवन दूसरे के लोक का विरोधी है वे परभक्षी हो जीवन निर्वाह करते हैं । किन्तु वास्तव में तो वही जीता है जो दूसरे के लोक का अविरोध करते हुए जीता है ।

किं धनेन करिष्यन्ति देहिनोऽपिगतायुषः ।
यद्वर्द्धमितुमिच्छन्तस्तच्छरीरमशाश्वतम् ।।
अशाश्वतानिमित्तानि विभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्योधर्मसंग्रहः ।। (व्यास स्मृ.)

वृद्ध (जिनकी आयु प्रतिदिन क्षीण हो रही है) मनुष्य धन से क्या करेंगे, जिस शरीर का पोषण धन से किया जिसके सुन्दर सुडौल स्वस्थ होने की चिन्ता की वह भी अशाश्वत है और धन से जो भोग भोगे जा सकते हैं, वे भी अशाश्वत हैं, अनित्य हैं, ठहरने वाले नहीं है । केवल मृत्यु ही शाश्वत हैं ऐसे में धर्म संग्रह ही कर्तव्य है ।

अल्पेनापि हि शुल्केन पिता कन्यां ददाति यः।
रौरवे बहुवर्षाणि पुरीषं मूत्रमश्नुते।। आपस्तम्बन स्मृतिः

- जो पिता कुछ भी धन लेकर कन्या का दान करता है, वह मनुष्य बहुत वर्षों तक रौरव नरक में निवास करके विष्ठामूत्र को खाता रहता है।

यतये कांचनं दत्वा तांबूलं ब्रह्मचारिणे।
चोरेभ्योऽप्य भयं दत्वा दातापि नरकं व्रजेत्।। पाराशर स्मृतिः

- जो दाता सन्यासी को सुवर्ण आदिक धन दान करता है तथा ब्रह्मचारी को ताम्बूल और चोरों को अभय देता है वह नरक को जाता है।

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ।।
पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः।
पारदापह्लवाश्चीना, किराता दरदाः खशाः।। (मनु. अ. 10/44)

- पौड्रक (मेदिनीपुर), ओड्र (कटक), द्रविड़ (पूर्वीघाट), काम्बोज (अरब), यवन (मक्का), शक (टरकी), पारद (महाचीन), पह्लव (काबुल), चीन, किरात (देश विशेष), दरद (दार्जलिंग) और खस (ईरान) इन देशों के निवासी क्रिया के लोप होने से धीरे-धीरे शूद्र हो गये।

प्रवचन

श्रीसत्य सनातन धर्मो विजयतेतरां

जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिव कामेश्वर वृहद गोपाल

।। श्री हरिः ।।

“*ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं, न कामार्थाय जायते ।
ब्राह्मण्यं बहुभिरवाप्तये तपोभिस्तल्लब्ध्वा न रतिपरेण हेलितव्यं ।
स्वाध्याये तपसि दमे च नित्ययुक्तः
क्षेमार्थी कुशलपरःसदा यतस्व ।।” (महाभारत शांतिपर्व)

- अर्थात ब्राह्मण का यह शरीर, यह ब्राह्मण जन्म भोगोपभोग के लिए, भोग भोगने के लिए पैदा नहीं होता है।

बहुत समय तक बड़ी भारी तपस्या करने से ब्राह्मण का शरीर मिलता है । उसे पाकर विषयानुराग में फंसकर उसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए । अतः यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो कुशलप्रद कर्म में संलग्न हो सदा स्वाध्याय, तपस्या और इन्द्रिय संयम में पूर्णतः तत्पर रहने का प्रयत्न करो ।.....

देखिये, श्री भगवान कहते हैं कि “बहूनां जन्मनावन्तो ज्ञानवान मां प्रपद्यते” बहुत से जन्मों के पश्यात ज्ञानवान अर्थात ब्राह्मण का जन्म मिलता है ; ऐसा क्यों ? ब्राह्मण कौन है ? अरे इस संसार पर अनुग्रह करने की इच्छा से ब्रह्म ने जो ईश्वरीय अद्वैत ज्ञान के साथ पृथ्वी पर भेजे हैं, वे ब्राह्मण हैं - “ईश्वरानुग्रहादेवपुंसांऽद्वैतवासन महद्भय परित्राणाद विप्राणामुपजायते ।।” ब्रह्म की तो महिमा ही ऐसी है कि जब उसने ब्रज में जन्म लिया तो साधारण ब्रज गोपी जो अहीरिन थीं, वे भी कहने लगीं कि “कृष्णोऽहम पश्चतगतिं ललितां इति तन्मनाः - अरी सखी, देख देख मैं कृष्ण हूं! कितनी ललित गति से चलता हूं ।

परिणाम में महान आचार्यों ने भी उन्हें अपना गुरु माना । तो कहने का आशय यह है कि यह जो ब्राह्मण जन्म मिला है जिसमें ब्रह्माद्वैत का अनुभव संभव है उसका सदुपयोग करो । हमारे पितामह महाराज कहा करते थे कि ब्राह्मण का जन्म पाकर भी यदि ब्रह्म न हो सके, ब्रह्म को न पा सके तो सबकुछ व्यर्थ है ।

देखो ब्राह्मण का जन्म मिलते ही ब्रह्माद्वैत के साधन अवार्ड में मिलते हैं; प्रथम ब्रह्म सूत्र जिसमें सृष्टि के सभी देवताओं, त्रिदेव आदिक सभी का आह्वान किया जाता है द्वितीय वेदमाता गायत्री। ”सविता देवानां प्रसविता” - देवों की जननी सावित्री, वेदों की जननी सावित्री । इन सावित्री की, गायत्री की महिमा ऐसी है कि इनके जप से ब्रह्माद्वैत सिद्ध हो ही जाता है , लोक को यही शिक्षा देने के लिए ही तो श्री राम - श्री कृष्ण सभी गायत्री जप अत्यंत निष्ठा पूर्वक ” ब्रह्म जजाप्य” किया करते हैं । अतः ब्राह्मण जन्म में स्वरूपनुसन्धान के साधन भी न्यूनाधिक मिल ही जाते हैं , अब तो बस एक ही कमी रहती है कि श्री हरि का अनुग्रह मानकर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव और स्वधर्म पालन -

“हरि तुम बहुत अनुग्रह कीनों, साधन धाम विबुध दुर्लभ तन । मोहि अनुग्रह दीनो । हरि तुम बहुत अनुग्रह कीनों ।”

जहां तक धर्म और सम्प्रदाय कि बात है हम सदैव भ्रमित रहते हैं confused रहते हैं। देखो जी, हमें सर्वप्रथम यह समझना होगा कि वैदिक धर्म/श्रौत धर्म गंतव्य है, साध्य है और संप्रदाय मार्ग हैं, साधन हैं।

यदि हम यह भली प्रकार समझ गये की मनुष्य जीवन का एक मात्र उद्देश्य स्वस्वरूपनुसन्धान है तब सब कुछ बड़ा आसान हो जाएगा- ‘स्वस्वरूपानुसंधान धर्म इत्य भिदीयते’ । जिस अंतर को जानने के लिये

हम परेशान हैं , वह स्वयमेव ही हमें स्पष्ट हो जाएगा ।

देखिये, मानव मात्र का धर्म है, सनातनधर्म है, अजी स्रष्टि के आदि से धर्म है, स्वस्वरूप का अनुसंधान और यही वैदिक सनातन धर्म का उद्देश्य है । सम्प्रदाय मार्ग हैं, गंतव्य नहीं ; साधन हैं , साध्य नहीं । अब प्रश्न उत्पन्न हुआ कि ऐसा ही है तो कि वैदिक सनातन धर्म में इतने सम्प्रदाय क्यों ? महाराज, इतने सम्प्रदाय होना आवश्यक है, अनिवार्य है । देखो, ''*महाभाग्याद एकैकस्यापि बहूनि नाम धेयानि भवन्ति" ''एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति" इत्यादि के अनुसार एक अद्वय ब्रह्म ही विविध नाम रूपों में स्तुत्य है । यह ठीक इसी प्रकार है जैसे कि किसी को श्रेष्ठ अभिनेता कह देने से यह स्पष्ट नहीं होता कि वह महान योगी भी है, अतः उसे श्रेष्ठ अभिनेता और महान योगी दोनों ही स्पष्ट रूप से कहना होगा अतः दो नाम और रूप होंगे, अस्तु।

दूसरे, सनातन धर्म में इष्ट के स्वरूप का चुनाव करने की स्वतंत्रता है । देखो , देवर्षि असित के पौत्र और देवल पुत्र महर्षि शांडिल्य जो भगवान श्रीकृष्ण के परम गुरु थे, स्पष्ट कहते हैं कि- "ध्याननियमस्तु दृष्टसौकर्यात" अर्थात ध्यान नियम दृष्ट/साध्य की सुगमता के लिए ही है । आशय यह है ब्रह्म के विविध स्वरूपों में से जिस साधक विशेष का चित्त ईश्वर के जिस स्वरूप में सर्वाधिक लगे, ब्रह्म का वही स्वरूप उसका स्वाभाविक ईश्वर है । अतः एक से अधिक सम्प्रदाय श्री सत्य सनातन धर्म की आवश्यकता ही नहीं , साध्य को सम्यक रूपेण प्राप्त करने के लिए, अनिवार्यता हैं । देखो सभी की रुचि एक जैसी नहीं होती" रुचीनां वैचित्र्याद" किसी को ऐश्वर्य पसंद है तो किसी को वैराग्य । किसी की राम में अधिक आसक्ति है तो किसी की कृष्ण में । ये तो हुई सम्प्रदायों की बात , अब मुख्य वैदिक धर्म की भी एक बात है ।

सभी सम्प्रदायों में आज भी सर्वमान्य है " ब्रह्मसूत्र" या यज्ञ सूत्र / जनेऊ परंपरा, यज्ञोपवीत । यह किसी भी सम्प्रदाय में किसी प्रकार बाधक नहीं हो सकती क्योंकि ''ब्रह्मसूत्र" प्रदान करते समय जो मंत्र दिया जाता है उसके ध्येय ; जगत उत्पादक माता गायत्री / सावित्री / सविता हैं । तीनों वर्णो के लिए गायत्री मुख्य उपास्य हैं । वास्तव में तो आदित्य, गणेश, देवी, शिव तथा केशव किसी भी स्वरूप की उपासना, एकमात्र ब्रह्म सूत्र मंत्र या गायत्री मंत्र द्वारा की जा सकती है किन्तु फिर भी साधक को ऐसा लगता हो कि किसी सम्प्रदाय विशेष में दीक्षित हो । तब उसे अपने चित्त की आसक्ति के अनुसार ही इष्ट का निश्चय करना चाहिए । यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि जो वेद में निष्ठा रखते हैं, ब्रह्मसूत्र या जनेऊ धारण करते हैं- वे वैदिक हैं ।

वैदिकों के यहां वेद प्रधान हैं श्रुति प्रधान है और सब कुछ गौण, वे सब में श्रद्धा तो रखेंगे किन्तु श्रुति से अविरुद्ध । आशय यह है कि वैदिकों के यहां वेद तथा वेदोक्त कर्म एवं तदनुसारी लिङ्गों का प्राधान्य होता है और तद-अविरुद्ध प्रकार से ही विष्णु शिव आदि देवताओं की उपासना होती है ।

वैदिक सद्गृहस्थों को अपने इष्ट के स्वरूप से भिन्न किसी स्वरूप की निंदा करने का तो अवकाश ही नहीं है। अपितु ''सर्वं खल्विदं ब्रह्म" - यह सब कुछ ब्रह्म है इस भाव ही अभीष्ट है अर्थात सभी स्वरूप मेरे इष्ट के हैं यही भाव अभीष्ट है । यही अनन्य भक्ति है, इससे इतर नहीं ।

(श्री पाद आचार्य श्रीकांत श्री श्रीजी महाराज के प्रवचन से साभार)

प्रस्तुतीः
श्री वैदिक सनातन धर्म प्रकाशन
यज्ञशाला/सत्संग्भवन, श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर,
बड़ी हवेली-श्रीजी दरबार, महाराजश्री कि ठेक,
गतश्रम टीला, मथुरा

नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी/राशि के अनुसार मास दशा

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	इ, उ, ए ओ, वा, वि वू, वे, वो	का, की, कू घ, ड, छ के, को, हा	ही, हू, हे हो, डा, डी डू, डे, डी	मा, मी, मू मे, मो, व टी, टू, टे	टो, पा, पी पू, ष, ण ठ, पे, पो
13 अप्रैल से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	14 मई से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	3 अप्रैल से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	22 मार्च से राहु दशा दिन 42 प्रवे.	22 अप्रैल से राहु दशा दिन 42 प्रवे.	24 मार्च से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.
4 मई से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	4 जून से चंद्र दर्शा दिन 50 प्रवे.	15 जून से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	4 मई से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	4 जून से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	22 मई से राहू दशा दिन 42 प्रवे.
25 जून से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	27 जुलाई से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	6 जुलाई से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	16 जुलाई से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	16 अगस्त से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	6 जुलाई से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.
25 जुलाई से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	25 अगस्त से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	27 अगस्त से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	6 अगस्त से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	6 सितम्बर से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	17 सितम्बर से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.
21 सित. से शुक्र दशा दिन 36 प्रवे.	21 अक्टू. से शुक्र दशा दिन 36 प्रवे.	25 सित. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	27 सित. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	27 अक्टू. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	7 अक्टू. से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.
27 अक्टू. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	26 नव. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	20 नव. से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	25 अक्टू. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	24 नव. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	26 नव. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.
24 दिस. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	22 जन. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	25 दिस. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	19 दिस. से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	18 जन. से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	23 दिस. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.
3 फर. से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	4 मार्च से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	20 फर. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	24 जन. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	22 फर. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	17 फर. से शनि दशा दिन 36 प्रवे.

नव-वर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरि दिनदशा ज्ञानार्थ सुगमसारिणी/राशि के अनुसार मास दशा

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते	तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू,	ये, यो, भा भो, भू, धा फा, ढ़ा, मे	भो, ज, जी, जू जे, जो, खा, खी खू, खे, खो, गा, गी	गू, गे, गो सा, सी, सू सो, दा	दी, दु, थ झ, ञ, दे, दो झ, चा, ची
18 मार्च से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	17 अप्रैल से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	22 मार्च से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	24 मार्च से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	23 अप्रैल से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	3 अप्रैल से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.
23 अप्रैल से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	25 मई से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	18 मई से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	21 अप्रैल से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	22 मई से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	25 मई से भौम दशा दिन 28 प्रवे.
24 जून से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	25 जुलाई से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	25 जून से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	19 जून से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	20 जुलाई से शनि दशा दिन 36 प्रवे.	24 जून से बुध दशा दिन 56 प्रवे.
6 अगस्त से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	6 सितम्बर से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	25 अगस्त से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	27 जुलाई से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	27 अगस्त से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.	21 अगस्त से शनि दशा दिन 36 प्रवे.
17 अक्टू. से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	16 नव. से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	7 अक्टू. से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	25 सित. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	25 अक्टू. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.	27 सित. से गुरु दशा दिन 58 प्रवे.
6 नव. से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	6 दिस. से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	15 दिस. से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	6 नव. से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	6 दिस. से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.	24 नव. से राहू दशा दिन 42 प्रवे.
25 दिस. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	24 जन. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	4 जन. से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	14 जन. से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	12 फर. से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.	4 जन. से शुक्र दशा दिन 70 प्रवे.
22 जन. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	20 फर. से बुध दशा दिन 56 प्रवे.	22 फर. से भौम दशा दिन 28 प्रवे.	2 फर. से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	4 मार्च से चंद्र दशा दिन 50 प्रवे.	14 मार्च से सूर्य दशा दिन 20 प्रवे.

श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद् के उद्देश्य

(श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास का एक आनुषांगिक संगठन)

श्री वैदिक सनातनधर्म परिषद मानव कल्याण के महाव्रत के साथ श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास द्वारा गठित की गयी है। महाव्रत की शास्त्रीय परिभाषानुसार :

'जातिदेशकाल नियमान्न विच्छिन्ना सार्वभौमाः महाव्रतम् ।'

अर्थात् जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न महाव्रत हैं। अतः स्पष्ट है कि श्री वैदिक सनातनधर्म परिषद् का गठन जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न है।

1. विश्वकल्याण: सम्पूर्ण विश्व को सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य है।
2. **'मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्म ज्ञानेन येन हि । तत्सार भूतं यद्यत् स्यात् मथुरा सा निगद्यते।'** आदि श्रुति वाक्यों के अनुसार मथुरा के ऐतिहासिक वैदिक एवं ब्रह्मनिष्ठ स्वरूपानुकूल वेद-वेदान्त, धर्मशास्त्र आदि के अध्ययन-अध्यापन की निःशुल्क व्यवस्था करना एवं समाज के बौद्धिक आध्यात्मिक विकास हेतु पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की व्यवस्था करना।
3. **'गवां विश्वस्य मातरः'** आदि शास्त्रवाक्यों के अनुसार गौ-संरक्षण के उद्देश्य से विशाल गौशालाओं का निर्माण करना एवं असहाय, बीमार एवं वृद्ध गायों का पालन-पोषण, सेवा तथा बीमार गायों के उपचार हेतु व्यवस्था करना।
4. ब्रज क्षेत्र की जीवनधारा 'श्री यमुना' की प्रदूषण मुक्ति हेतु यथासंभव प्रयास करना एवं इस हेतु प्रयासरत अन्य संस्थाओं से सहयोग करना।
5. असहाय व्यक्तियों के लिए अन्नक्षेत्र, पेयजल आदि की व्यवस्था एवं उनके ठहरने के लिए आश्रम, आलय आदि का निर्माण एवं व्यवस्था।
6. श्रीपीठ-श्रीजी मंदिर द्वारा समय-समय पर आयोजित जयन्तियों, पर्वों एवं रथयात्रादि अन्य उत्सवों के आयोजन में सहयोग।
7. जो-जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन-मन-धन से प्रयत्न और सहायता करें, वह-वह इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होंगे।
8. यह कार्य सर्वहितकारी है - इसलिये सह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।
9. जो-जो सभा देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में परोपकार करना अभीष्ट रखती है, वह-वह इस सभा की सहायकारिणी समझी जायेगी।
10. जो-जो मनुष्य राजनीति एवं प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध स्वार्थी, क्रोधी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राष्ट्र, राष्ट्राधिप और राष्ट्रवासियों के लिये अनिष्ट कर्म करे, वह-वह इस सभा से सम्बन्धित न समझा जाये।
11. समान उद्देश्य की अन्य संस्थाओं का उनके उद्देश्य प्राप्ति में सहयोग एवं लोक-कल्याण के उद्देश्य हेतु प्रकाश, स्वच्छता एवं पेयजलादि की व्यवस्था।

यदि आप परिषद् की उक्त उद्देश्यों में किसी भी प्रकार का सहयोग करना चाहते हैं तो कृपया परिषद् के पदाधिकारियों से सम्पर्क करें।

सुरेश विट्ठलदास चतुर्वेदी
फाउण्डेशन
का धर्मादा प्रकल्प

SVC

एस वी सी हैल्थ केयर

(लागत मूल्य वाली विश्वसनीय दवाई की दुकान)

ट्रस्ट द्वारा सस्ती दवाईयाँ

1, सूरज मार्केट, होटल श्याम इन कॉम्पलैक्स
गुरुद्वारे के पास, होली गेट, मथुरा - 281001
फोन : 2400166, 2400167
ई मेल : svchealthcare@gmail.com

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद् आचार्य

श्री श्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज
(गुरुजी महाराज)

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज
(वर्तमान पीठाधीश्वर)

|| श्री मन्महागणाधिपतये नमः ||

|| श्री बाबा महाराजाय नमः ||

ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ, श्रीजी दरबार ,श्री श्रीजी मंदिर (बड़ी हवेली) आदि पीठाधीश्वर अखण्ड भूमण्डलाचार्य निगमागमसार हृदय माथुर चतुर्वेदब्राह्मण कुलगुरु प्रातः स्मरणीय श्री श्री १००८ श्री श्री शीलचंद्राचार्य महाराज्ञानां स्वरूप श्री श्री महागणपति (दशभुजी गणेश) विराजमान : गजापायसा,श्रीधाम मथुरा ।